



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



निर्झर



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय)

की हिंदी अर्ध वार्षिक पत्रिका

अंक 49

सितंबर - 2023



निर्झर के 48वें अंक का विमोचन करते हुए महानिदेशक (केन्द्रीय व्यय) महोदय



श्री राजीव शर्मा द्वारा कोरिया में आयोजित विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप 2023 में स्वर्ण पदक जीतने पर महानिदेशक महोदय एवं निदेशक (प्रशासन) महोदयों द्वारा प्रोत्साहित करते हुए

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री राजीव पाण्डेय
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)

सलाहकार समिति

सुश्री सौम्या परिहार
निदेशक (प्रशासन/राजभाषा)

श्री सतीश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

सुश्री पद्मा सुरेश
हिन्दी अधिकारी

संपादक

श्री सतीश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

अर्ध वार्षिक पत्रिका निर्झर	:	अंक 49 सितंबर 2023
प्रकाशक	:	महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली- 110002.
स्वत्वाधिकार	:	महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली- 110002.
अंक	:	उनचास
पाठ्यक्रम प्रारूपण एवं समीक्षा	:	सुश्री पद्मा सुरेश, हिन्दी अधिकारी
पाठ्यक्रम सज्जा, समीक्षा एवं आवरण एवं सज्जा	:	श्री सतीश कुमार, व.ले. प.अ.
पाठ्यक्रम टंकण	:	श्री नीरज, आ.प्र.प्र.

आवरण पृष्ठ के बारे में

चंद्रयान-3 चाँद पर खोजबीन करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा भेजा गया तीसरा भारतीय चंद्र मिशन है। इसमें चंद्रयान-2 के समान एक लैंडर और एक रोवर है,लेकिन इसमें ऑर्बिटर नहीं है।

यह मिशन चंद्रयान-2 की अगली कड़ी है,क्योंकि पिछला मिशन सफलता पूर्वक चाँद की कक्षा में प्रवेश करने के बाद अंतिम समय में मार्गदर्शन सॉफ्टवेयर में गड़बड़ी के कारण सॉफ्ट लैंडिंग में विफल हो गया था,सॉफ्ट लैंडिंग का पुनः सफल प्रयास करने हेतु इस नए चंद्र मिशन को प्रस्तावित किया गया था।

चंद्रयान-3 का लॉन्च सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (शार), श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई,2023 को भारतीय समय अनुसार दोपहर 2:35 बजे हुआ था। यह यान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर 23 अगस्त 2023 को भारतीय समय अनुसार सायं 06:04 बजे सफलतापूर्वक उतर चुका है। इसी के साथ भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतारने वाला पहला और चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश बन गया।

चंद्रयान-3 के मिशन के उद्देश्य हैं:

- चंद्र सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग प्रदर्शित करना
- रोवर को चंद्रमा पर भ्रमण का प्रदर्शन करना और
- यथास्थित वैज्ञानिक उपयोग करना

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचनाकार सर्व श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1	महानिदेशक (केंद्रीय व्यय) का संदेश		7
2	संपादक की ओर से		8
3	जी-20 को नई दिशा देता भारतीय नेतृत्व	हेमंत कुमार मिश्र	9-12
4	अधूरी आज़ादी ।(गीत)	वेदप्रकाश फोंदणी	13
5	नृत्य की महामारी	अनुज मेहता	14-16
6	जीना है तो जीतना पड़ता है	हरेंद्र कुमार	17
7	अपनी चुटिया बचाओ	हरेंद्र कुमार	18-19
8	लाल वाली बस	हरेंद्र कुमार	20-22
9	भारत में पर्यटन	पूनम यादव	23-27
10	किस्सा कॉफी का	योगेश लक्षकार	28-30
11	माता - पिता	सुरेंद्र कुमार	31-34
12	सच्चे सुख का मार्ग	कृष्णा सोनी	35
13	भवसागर के पार का साधन	कृष्णा सोनी	36-37
14	पुस्तकों में घटती रुचि	मयंका अधलखा	38-40
15	भारत: प्राचीन काल से ही विश्व गुरु	रवि शंकर प्रभाकर	41-44
16	चल उठ, खड़ा हो जाग रे ।	शेखर कौशिक	45

17	आज की युवा पीढ़ी	दीप्ति दीक्षित	46
18	छत्रपति शिवाजी	सुरेंद्र सिंह	47-54
19	मेरे प्यारे दो भाई	पूजा	55
20	चालीस की महिला	पूजा	56
21	उत्तराखंड के पर्यटन स्थान	नरेंद्र सिंह चौहान	57-59
22	राजभाषा अनुभाग की गतिविधियां	राजभाषा अनुभाग	60
23	लेखक परिचय		61-62

नोट: इस गृह पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं तथा कार्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।



संदेश



हिंदी पत्रिका 'निर्झर' के 49वें अंक को पाठकों को समर्पित करना- निःसंदेह हर्ष का विषय है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने लेख, कविता एवं यात्रा वृत्तांत के रूप में अपने भावों को व्यक्त करते हुए हिन्दी भाषा में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित की है जो सराहनीय है।

सभी योगदान देने वाले कर्मियों एवं संपादकीय मंडल को मेरी हार्दिक बधाइयां। पत्रिका में दिया गया योगदान न केवल रचनाकारों को अपितु कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को कार्यालय के रोजमर्रा के कार्यों को हिन्दी भाषा में करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है। मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करता हूँ।

महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय)



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय), नई दिल्ली की हिंदी गृह पत्रिका निर्झर के 49वें अंक को सुधी पाठकों के कर कमलों तक पहुंचाने में मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है ।

इस पत्रिका में प्रत्येक रचनाकार ने अपनी कलम के माध्यम से स्वयं के भावों को कागज पर उतारकर आपके दिल तक पहुँचाने की कोशिश की है। मैं विश्वास करता हूँ कि वे इस प्रयास में सफल होंगे ।

पत्रिका प्रकाशन से संघ सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने में जरूर गति मिलेगी और कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों को मूल रूप से हिंदी में सोच विचार करते हुए कार्यालयीन कार्य निपटाने के लिए प्रेरणा मिलेगी ।

पाठक वृंद से अनुरोध किया जाता है कि पत्रिका के रचनाकारों के प्रयास पर अपनी प्रशंसा या आलोचना जैसे भी हो से हमें अनुग्रहित करें ताकि इस पत्रिका को और रोचक एवं सूचनाप्रद बनाया जा सके ।

सतीश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

जी-20 को नई दिशा देता भारतीय नेतृत्व



श्री हेमंत कुमार मिश्रा, स.लेप. अ.

परंपरागत रूप में समूची विश्व अर्थव्यवस्था एवं वित्तीय व्यवस्था का नियंत्रण जी-8 (अब जी-7) द्वारा किया जाता था, परंतु नब्बे के दशक के दौरान विश्व अर्थव्यवस्था ने करवट लेना शुरू किया और आर्थिक विकास का केंद्र विकासशील देश बनने लगे, इसलिए एक नवीन समूह की स्थापना का निर्णय लिया गया जिसमें विकसित देशों के अलावा विकासशील देश भी हों। अतः जी-20 की स्थापना की गई जिसमें 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, स्पेन और संयुक्त राज्य अमेरिका) और एक यूरोपिय यूनियन शामिल है। 9-10 सितम्बर 2023 में दिल्ली में हुए शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अफ्रीकी यूनियन (55 सदस्यीय) को शामिल करने के प्रस्ताव पर अन्य सदस्य देशों की सहमति के पश्चात अब अफ्रीकी यूनियन भी इस समूह में शामिल हो गया है, इस प्रकार यह संगठन/समूह अब जी-21 हो जाएगा। इस संगठन का मूल उद्देश्य विश्व के वित्तीय मुद्दों पर सहयोग एवं परामर्श करना है। यह समूह तीन प्रमुख ट्रैकों में काम करता है, इसमें से दो आधिकारिक (वित्त और शेरप्पा ट्रैक) एवं एक अनौपचारिक (सहभागिता ट्रैक) है। वर्तमान में यह संगठन विश्व के लगभग 85 प्रतिशत जीडीपी, दो-तिहाई जनसंख्या एवं 75 प्रतिशत विश्व व्यापार का प्रतिनिधित्व करता है।

जी-20 के 18 वें शिखर सम्मेलन का आयोजन 9-10 सितंबर के दौरान दिल्ली में नवनिर्मित 'भारत मंडपम' में किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री मोदी द्वारा की गई। इस सम्मेलन की उपलब्धियां अभूतपूर्व थी एवं इस सम्मेलन में भारतीय नेतृत्व एवं कूटनीति का लोहा सभी शामिल पक्षों ने स्वीकार किया। इस बार के सम्मेलन का थीम था - 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' जो भारतीय परंपरागत अवधारणा वसुधैव कुटुंबकम को ही चरितार्थ करता है। इस वर्ष भारत द्वारा इसके सदस्य देशों के अलावा बांग्लादेश, मिस्र, मॉरिशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और यूएई को आमंत्रित किया गया था। इसके अतिरिक्त नियमित रूप से आमंत्रित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (संयुक्त राष्ट्र, आई एम एफ, वर्ल्ड बैंक, डब्ल्यूएचओ, डब्ल्यू टी ओ, आई एल ओ, एफ एस बी, एवं ओईसीडी) एवं क्षेत्रीय

संगठनों (एयू, एयूडीए-एनईपीएडी, आसियान) के प्रमुखों के अलावा आईएसए, सीडीआरआई एवं एडीबी के प्रमुखों को भी आमंत्रित किया गया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने जी-20 को अर्थव्यवस्था केंद्रित के बजाए मानव केंद्रित बनाने पर बल दिया। इसके साथ ही इस सम्मेलन का जो थीम था 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' उस पर भारत मंडपम में 9 सितंबर को आयोजित पहले सत्र 'एक पृथ्वी' में कहा कि जी-20 के अध्यक्ष के तौर पर भारत पूरी दुनिया से यह आह्वान करता है कि हम सबसे पहले वैश्विक भरोसे में कमी को एक विश्वास में बदलें और दुनिया के कल्याण के लिए सभी साथ मिलकर चलें। उन्होंने आगे कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल, उत्तर-दक्षिण का बंटवारा, पूरब-पश्चिम की दूरी, आतंकवाद, साइबर-सुरक्षा, स्वास्थ्य आदि चुनौतियों के समाधान के लिए मिलकर ठोस कदम उठाने की जरूरत है। उन्होंने पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए इस बात पर भी बल दिया कि समय की मांग है कि सभी देश ईंधन मिश्रण के क्षेत्र में मिलकर काम करें और पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण को वैश्विक स्तर पर 20 फीसद तक ले जाने की पहल की जाए।

प्रधानमंत्री मोदी ने दूसरे सत्र 'एक परिवार' में जी-20 देशों के सामने तीन सुझाव रखे- पहला दुनिया के टॉप स्पोर्ट्स लीग से आग्रह किया कि वे अपने कमाई का पाँच फीसद हिस्सा ग्लोबल साउथ के देशों में महिलाओं के खेल ढांचे में निवेश करें; दूसरा जिस तरह सभी देश अलग-अलग श्रेणी के वीजा जारी करते हैं, उसी तरह हम 'जी 20 टैलेंट वीजा' की एक स्पेशल केटेगरी बना सकते हैं और तीसरा हम विश्व स्वास्थ्य संगठन की देख-रेख में ग्लोबल बायो-बैंक बनाने के बारे में सोच सकते हैं। इसमें विशेष रूप से हृदय रोग, एनीमिया और ब्रेस्ट कैंसर जैसी बिमारियों पर ध्यान दिया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने तीसरे सत्र 'एक भविष्य' में जी 20 को और समावेशी बनाने और जलवायु परिवर्तन से निपटने पर जोर दिया।

जी 20 के दो दिवसीय बैठकों में दुनिया के सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने, जलवायु परिवर्तन से निपटने और शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल से लेकर आतंकवाद का कड़ाई से मुकाबला करने के मुद्दे शामिल रहे हैं। बैठक के बाद जारी दिल्ली घोषणा पत्र में भ्रष्टाचार से निपटने, महिला सशक्तीकरण, दुनिया में आर्थिक मजबूती और मुक्त व्यापार को लेकर भी प्रतिबद्धता जताई गई। इस सम्मेलन में सशक्त भारतीय नेतृत्व इस बात से

परिलक्षित होता है कि जी-20 में जारी किए गए संयुक्त घोषणापत्र को सभी पक्षों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिए गए। दिल्ली घोषणापत्र के कुछ प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं:-

- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए डिजिटल प्रोद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता(ए आई) के इस्तेमाल पर सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई ।
- आतंकवाद, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक है , अतः इससे कड़ाई से निपटने एवं आतंकियों को पनाह देने वालों को चोट करने पर सहमति जताई गई।
- भ्रष्टाचार को बर्दाश्त न करने की प्रतिबद्धता दोहराई गई एवं इससे निपटने के लिए आपसी सहयोग को मजबूत बनाने का आह्वान किया गया।
- सभी पक्षों ने सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति में तेजी लाने, हरित विकास समझौते और बहुपक्षवाद में नए सिरे से जान फूकने पर सहमति जताई है।
- जी 20 देशों ने माना है कि स्टार्ट अप और एमएसएमई विकास के प्राकृतिक इंजन है। समूह देशों ने भारत की जी-20 की अध्यक्षता के दौरान स्टार्ट अप 20 एंगेजमेंट ग्रुप की स्थापना का स्वागत किया।
- घोषणा पत्र में कहा गया है कि हम महिला सशक्तिकरण के लिए एक नया कार्यसमूह बनाने पर सहमत हैं। जी-20 शेरपा अमिताभ कान्त ने कहा कि यह घोषणा सबसे बड़ी उपलब्धि है।
- घोषणा पत्र में बहुपक्षीय विकास बैंक का दायरा बढ़ाते हुए इसके माध्यम से कम विकसित देशों को आर्थिक मदद करने पर फोकस किया गया है साथ ही जी 20 देशों के बीच वैश्विक कर्ज की दिक्कतों के प्रबंधन पर भी सहमति बनी है। विश्व बैंक की तरफ से निम्न और मध्यम आय वर्ग के देशों को आसान सहायता मुहैया कराने की बात कही गई है।
- जी 20 में अफ्रीकन यूनियन को स्थाई सदस्यता देने के भारत के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मंजूरी दी गई।
- सदस्य देशों के बीच इस बात को लेकर भी आम राय रही कि आर्थिक और सामाजिक विकास को मजबूती देने के लिए डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के इस्तेमाल को बढ़ाने की जरूरत है साथ ही भारत की तरफ से इस दिशा में 'एक भविष्य गठबंधन' और साझा तंत्र विकसित किए जाने की पेशकस की गई।
- क्रिप्टो एसेट्स के मुद्दे पर सदस्य देशों के वित्तमंत्रियों एवं केन्द्रीय बैंकों के गवर्नर इस मुद्दे के रोडमैप पर आगामी अक्टूबर माह में चर्चा करेंगे। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर टैक्स के मामलों को गंभीरता से लेते हुए इस पर सहयोग का आश्वासन दिया।

- घोषणा पत्र में भारत-मध्यपूर्व-यूरोप गलियारा (आईएमईसी आर्थिक कॉरीडोर) बनाने की बात कही गई, जो तरक्की के नए रास्ते खोलेगा। वास्तव में यह गलियारा चीन के बेल्ट एण्ड रोड पहल का विकल्प बनेगा।

भारत के कुशल नेतृत्व में जिस परिपक्वता से जटिल वैश्विक परिस्थितियों के बीच समाधान का ब्लूप्रिन्ट दुनिया को दिया गया है, वह अपने आप में अद्भुत एवं अविस्मरणीय है। वस्तुतः वैश्विक कूटनीति के मंच पर एक उत्तम आयोजक वही होता है जो मैत्री प्रयासों में अपनी ओर से कुछ जोड़कर दुनिया को बेहतर करने की कोशिश को आगे बढ़ाता है। कुल मिलाकर शिल्प, संस्कृति और स्वाद पर आधारित भारत का यह शिखर आयोजन दुनिया को मिलन-सद्भाव का स्पष्ट संदेश भी है। प्रधानमंत्री मोदी ने शिखर सम्मेलन के दौरान एक प्रार्थना भी की स्वस्ति अस्तु विश्वस्य जिसका आशय है सम्पूर्ण ब्रह्मांड में सौभाग्य हो। विश्व कल्याण के इन्हीं आदर्शों से भारत ओत-प्रोत रहा है और जी-20 का 18 वाँ शिखर सम्मेलन उसी दिशा में स्वर्णिम पड़ाव के रूप में याद किया जाएगा साथ ही इस आयोजन से जुड़ी यह बात भी हमेशा याद की जाएगी कि भारतीय राजनय ने तमाम तनावों के बीच सहमति का खाका खींचने में कामयाबी हासिल कर ली।



अधूरी आज़ादी! (गीत)



गीतकार: वेद प्रकाश फोन्दणी

ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!
उदास मन है, हताश तन है
मना न पाऊं मैं अमृतोत्सव!!१॥

न चहचहाना ही पक्षियों का
है बोल-बाला नरभक्षियों का।
सुनाई देता है कोलाहल ही
न कूज कुंजन में कोई कलरव।।२॥
ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!

मैं भारतीय हूं या हिन्दुस्तानी
हूं इण्डियन याकि कोई प्राणी!
न मेरी पीड़ा किसी ने जानी
पड़ा ज्यूं पहचान के लिए शव।।३॥
ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!

है शब्द ही 'एकता' यहां, पर-
न दूँडे मिलती वो है कहां पर।
बंटे हैं सब जाति पंथ भाषा-
औं' दूँडते बैर नित्य नव-नव।।४॥
ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!

हैं दासता की कहानियां जो,
गुलामी की सब निशानियां जो-
मिटेंगी जब तक न जड़ से वे सब
तो कैसी आजादी! कैसा उत्सव!!५॥
ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!

न होगा जब संविधान इक-सा
न होगा जब हर विधान इक-सा।
न इक जुबां औं' निशान इक-सा
तो कैसी आजादी! कैसा उत्सव!!६॥
ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!

है दासता वाली मति अभी भी
है दासता वाली अति अभी भी।
अभी भी दुर्गति है दीनजन की
मनाए मन कैसे! अमृतोत्सव!!७॥
ये कैसा उत्साह! कैसा उत्सव!
अधूरी आज़ादी का महोत्सव!


आज़ादी का
अमृत महोत्सव

नृत्य की महामारी



श्री अनुज मेहता,
व.लेप.

कुछ दिन हुए अपने कुछ साथियों के साथ मैं ऑनलाइन वार्ता कर रहा था, सामाजिक कार्यों से जुड़े मेरे कुछ साथी विकलांगजनों के नृत्य-संगीत आयोजित करने के लिए चर्चा करते हुए भारत के अद्भुत नृत्यों के अतिरिक्त अन्य देशों के नृत्य और बॉलीवुड की शैली से तुलना कर रहे थे। कोरोना महामारी के साथ चर्चा करते हुए हंसी-हंसी में एक ने यह भी कह दिया कि नृत्य भी एक महामारी है, हर कोई इसकी चपेट में रहता है। इस पर सभी हँसे, किन्तु मैंने सोचा कि क्या सच में भी नृत्य से जुड़ा कोई रोग हो सकता है जिसके प्रभाव में लोग नाचते हों?

मुझे इस विचार पर संदेह था क्योंकि नृत्य एक कला है, यह एक प्रकार का ऊर्जापूर्ण शारीरिक व्यायाम भी है, इसके देवता साक्षात शिव (नटराज) हैं। अतः नृत्य को एक रोग मानना एक कठिन विचार था। किन्तु, यह भी विचार मुझे आया कि शिव का नृत्य तो ताण्डव है, जिससे कहर आने की कथाएं हमारे पुराणों में भी हैं। इसलिए मैंने विभिन्न स्रोतों में ऐसे नृत्य ढूँढने आरम्भ कर दिए, और मैंने पाया कि संसार में कई बार नृत्य का प्राणहारी प्रकोप भी हुआ है, यूरोप के इतिहास में 7वीं से 17वीं सदी के बीच ऐसे विवरण भी दिए गए हैं।

यहाँ मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ वे रोचक, अद्भुत और सम्भवतः कठोर पल जिसमें नृत्य एक कला के रूप में न होकर हाहाकार के रूप में हुआ, यह नृत्य पर आपके विचारों को भी अलग दिशा दे सकते हैं -

1. वर्ष 1021 (ग्यारहवीं सदी) में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, जर्मनी के सक्सोनी प्रान्त के शहर कोलबिगक में 18 लोग एक चर्च के बाहर जंगली नृत्य करने लगे और रुके ही नहीं, जो भी इनके बीच आया, वह भी नाचने लगा। यह स्थिति एक वर्ष तक चलती रही जब तक इसके प्रभाव में आने वाले सभी लोग नाचते-नाचते मर नहीं गए। इसका लाभ चर्च के तत्कालीन

पादरी ने उठाया, पादरी ने इस नृत्य कांड को अपने श्राप का असर बता कर स्थानीय अंधविश्वासी लोगों को अपने डर के वश में रखा।

2. वर्ष 1247 (तेरहवीं सदी) में जर्मन शहर एरफर्ट में मोसेले नदी के ऊपर एक पुल पर 200 लोग बेसुध होकर नाचने लगे। इससे पुल ही टूट गया और सभी डूब कर मर गए।
3. वर्ष 1374 (चौदहवीं सदी) में जर्मनी के अचेन में राइन नदी के तट पर लोग अचानक अपने घरों से निकले और बेसुध होकर नाचने लगे, वे तब तक नाचते रहे जब तक थक कर गिर के बेहोश नहीं हो गए। जब उन्हें होश आया, वे शरीर दर्द से छटपटाने लगे। हालाँकि ये लोग तो ठीक हो गए, किन्तु राइन नदी के पार हॉलैंड, बेल्जियम, पश्चिमी जर्मनी, और उत्तर-पूर्वी फ्रांस के तटीय क्षेत्रों में बेसुध नृत्य की लहर चल पड़ी। बहुत से लोग इसकी चपेट में आए, सैकड़ों लोग इसमें मारे गए। इस नृत्यकाण्ड का लाभ भी पादरियों ने उठाया, पादरियों ने इसे “सेंट जॉन का श्राप” घोषित करके लोगों को डरा कर रखा।
4. 15वीं सदी में इटली के अपुलिया में एक महिला को दोपहर को सोते समय टारंट्युला ने काट लिया, जिसके जहर ने उस महिला के शरीर में ऐसी ऐंठन पैदा की जिससे उसने नृत्य करना आरम्भ कर दिया। महिला नाचते हुए शहर के केंद्र तक पहुँच गई, और उसके पीछे कई लोग भी इसी दशा में नाचने लगे। तत्कालीन लेखों से पता चलता है कि लोग नाचते नाचते ही खा-पी भी रहे थे और एक दूसरे से मार-पीट भी कर रहे थे। यह स्थिति भी कई दिनों तक बनी रही। कुछ लोगों ने इसकी नकल करनी भी आरंभ की, इसी से दक्षिणी इटली का लोक नृत्य "टारंट्युल्ला" विकसित हुआ।
5. सबसे प्रसिद्ध है 16वीं सदी की “स्ट्रासबर्ग नृत्य महामारी” जिसने इसे “नृत्य प्लेग” का नाम दिया। जुलाई 1518 में स्ट्रासबर्ग शहर (तत्कालीन रोमन साम्राज्य के फ्रांस क्षेत्र में स्थित) में फ्राउ त्रोफिया नाम की एक महिला ने सड़क पर अचानक भयानक नृत्य आरम्भ कर दिया, और इस महिला के आस-पास आने वालों ने भी उसी प्रकार नाचना आरम्भ कर दिया। लोग थक कर गिर भी जाते, तो थोड़ी देर बाद फिर से उठ कर नाचना शुरू कर देते।
- लोगों की प्रतिक्रिया - तत्कालीन अन्धविश्वास से ग्रस्त लोगों ने इसे भूत-प्रेत का साया समझा, और इनसे बचाव के लिए शासन से सहयोग माँगा, जब सम्राट मैक्सिमिलन प्रथम के अधिकारियों को इसकी सूचना मिली, तो उन्होंने इस नृत्य को रोकने के लिए पादरियों और चिकित्सकों को बुलाया।

- पादरियों की प्रक्रिया - पादरियों ने पहले इसे “शैतान का प्रकोप” बता कर झाड़-फूंक द्वारा रोकने का प्रयास किया, किन्तु इसका कोई असर नहीं होने पर पादरियों ने इसे “गाँड की आज्ञा” मान लिया। किन्तु यह कोई समाधान नहीं था, इसलिए अधिकारियों ने चिकित्सकों को स्थिति नियंत्रित करने का निदेश दिया।
- चिकित्सकों की प्रक्रिया - चिकित्सकों ने पहले इसे मानसिक रोग घोषित किया, किन्तु जब किसी जोर द्वारा भी वे नृत्य को रोक न पाए और इस कार्य के लिए लगाए व्यक्ति भी नृत्य करने लगे, तो उन्होंने इसे “प्लेग” और “छूत की बीमारी” घोषित कर दिया।
- प्रभाव - सितंबर तक इस नृत्य प्लेग का प्रभाव घटने लगा, स्रोतों के अनुसार मृतकों की संख्या 15 व्यक्ति प्रतिदिन के अनुपात में थी। इस प्लेग को रोकने के लिए एक उपचार के प्रयास में प्रभावित लोगों को उनकी शारीरिक प्रक्रिया के प्रति जागरूक करने के लिए नृत्य के अनुकूल संगीत और धुनें बजाई गई थीं जिसके आधार पर स्विंग डांस, जिप्सी डांस आदि कई प्रकार के यूरोपीय नृत्यों का आविष्कार हुआ।

इस प्रकार जहाँ तक मुझे पता चला है, ऐसे नृत्य प्लेग की आरम्भिक घटनाएं जर्मनी में हुईं और उससे होते हुए अन्य देशों में पहुँचीं। किन्तु यह भी सम्भव है कि अन्य देशों में भी ऐसी घटनाएं हुई हों जिनका ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध नहीं है। विभिन्न अनुसंधानकर्ताओं के लेख बताते हैं कि अफ्रीका और वेस्ट इंडीज़ के कई कबीलों में विचित्र प्रकार के नृत्य लगातार चलते रहते हैं, और जहाँ तक यूरोप के नृत्य प्लेग का प्रश्न है, आज तक उनका कोई मान्य कारण या उपचार नहीं ढूँढ पाया है।

कला का एक बेहद लोकप्रिय साधन है नाच अथवा नृत्य, इसके कितने प्रसंग बन चुके हैं किन्तु किसी एक व्याख्या में इसको स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, शायद इसीलिए शरीर में किसी कारण किसी भी प्रकार से हिलने डुलने की स्थिति को नृत्य से जुड़ा हुआ रोग माना गया हो। कारण जो भी हो, यह अंतराष्ट्रीय लोक नृत्यों का निर्माण कर चुका है।



जीना है तो जीतना पड़ता है



श्री हरेन्द्र कुमार, व.लेप.

जीवन एक युद्ध है,
जीना है तो जीतना पड़ता है।

दुनिया बहुत निष्ठुर है,
अपना अधिकार भी छीनना पड़ता है।
मांगने से तो 5 गाँव भी नहीं मिलता है
उसके लिए भी महाभारत करना पड़ता है।
यहाँ प्यार के बदले प्यार नहीं मिलता है,
निःस्वार्थ प्रेम करने वाले जीवों को भी
बस स्वाद के लिए कटना पड़ता है।
यहाँ प्यार से ही हर बात नहीं बन जाती है,
करुणामयी श्री राम को भी धनुष उठाना पड़ता है।
वंशीधर कृष्ण को भी सुदर्शन चलाना पड़ता है।
कुछ पाना है तो समुद्र मंथन करना होगा,
अमृत के साथ विष भी अपने पास रखना होगा।
फूल की तरह मुस्काना है तो शूल भी पास रखना होगा।
दुनिया को समझना है तो गुण के साथ दुर्गुण भी रखना होगा।
दो विपरीत शक्तियों के संतुलन को हम समझ न पाए।
सैकड़ों वर्ष सताए गए तब भी होश में न आए
पूर्वजों के दिए ज्ञान को झुठला कर ज्ञानी बन बैठे हैं।
इतिहास को भुला कर स्वयं इतिहास बनने की ठान बैठे हैं।

अपनी चुटिया बचाओ



श्री हरेन्द्र कुमार, व.लेप.

बचपन की मेरी आदत थी हर चीज में आमोद-प्रमोद ढूँढ लेना। रविवार का दिन था। दोस्तों से मिलने के लिए घर से निकला तो देखा कि मेरा एक दोस्त सैलून से बाल मुंडवा कर बाहर निकल रहा था। कारण पूछने पर उसने बताया कि बहुत दिनों से सर नहीं मुंडवाया था बस इसलिए साफ- सफाई की वजह से टकला हो गया। बस फिर क्या था, मुझे शरारत सूझ गई। अगर एक व्यक्ति सर मुंडवाए तो कोई ध्यान नहीं देगा लेकिन एक बड़ा समूह ऐसा करे तो लोगों का ध्यान खींच ही जाता है। मैंने तुरंत से अपना सर भी मुंडवा डाला और अपने साथ-साथ आठ-दस दोस्तों को भी किसी न किसी तरह से सर मुंडवाने के लिए तैयार कर लिया। अब अपने मुहल्ले में हमलोग चर्चा का विषय बन चुके थे। सब मुहल्ले के लोग टोकने लगे कि सर क्यों मुंडवाया। अब मैंने सोचा कि कोई ऐसा कारण बताया जाए जो चर्चा का विषय बन जाए। संयोग से ठीक एक दिन पहले शनिवार को दक्षिण अफ्रीका के क्रिकेटर हेन्सी क्रोनिए की विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। मैंने सारे दोस्तों को समझा दिया कि अगर कोई टकला होने का कारण पूछे तो बता देना कि हमलोग क्रिकेट के बहुत बड़े फैन हैं इसलिए हेन्सी क्रोनिए को श्रद्धांजलि देने के लिए ऐसा किया। अब ये बात भी आग की तरह फैल गई कि ये बच्चे तो क्रिकेट के बहुत बड़े वाले फैन हैं।

मजा आ रहा था, चारों तरफ हमारी ही चर्चा हो रही थी लेकिन ये बस एक-दो दिनों की ही बात थी। फिर चर्चा बंद हो गई जो कि स्वभाविक ही था। इसलिए मेरे दिमाग में अब एक नए खुरापात ने जन्म लिया। हमारे हिन्दू धर्म में चुटिया रखने की अनिवार्यता होती है और अपने दोस्तों की इस मानसिकता में मेरे शरारत ने अपना घर बना लिया। मैंने अपने हाथ में ब्लेड लिया और चुपके से एक दोस्त की चुटिया लगभग पूरी तरह काट डाली। बस थोड़ा सा रहने दिया ताकि परंपरा भी निभा दिया जाए जाए। सर के बीचों बीच एक छोटा बाल का गुच्छा ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सर पर कोई मक्खी बैठी हो। अब वह दोस्त सभी दोस्तों के बीच हँसी का

पात्र बन चुका था। फिर क्या था चुटिया काटने का एक खेल शुरू हो चुका था। जिसकी कट चुकी थी उसका पूरा ध्यान दूसरे की चुटिया काटने पर था और जिनकी चुटिया बची हुई थी उनका सारा ध्यान अपनी चुटिया बचाने पर था। हालत ये हो गई थी कि दोस्तों को सोते समय भी चुटिया कटने का डर सताता रहता। सोते-जागते सारा ध्यान सिर्फ चुटिया पर। एक दोस्त ने तो हमलोगों के सामने खुद अपने हाथ से ही अपनी चुटिया काट ली। इस तरह एक सप्ताह तक यह खेल चलता रहा जिसमें मजा खूब आया।

अब सबकी चुटिया कट चुकी थी लेकिन मैं अब भी इस खेल को समाप्त करने के विचार में नहीं था। मैंने सारे दोस्तों में से एक ऐसे दोस्त को निशाना बनाया जो अपनी चुटिया को लेकर ज्यादा संवेदनशील था। मुझे बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं थी कि वह अपनी कटी हुई चुटिया को भी बचाने के लिए इतना जी-जान लगा देगा। मैंने तो बस एक दांव खेला था जो सफल हो गया। वह दोस्त अपनी चुटिया को बचाने के लिए लगभग गिड़गिड़ाने सा लगा- “कटी हुई चुटिया को ही क्यों काट रहे हो यार”, तो हमने कहा कि जो बची खुची है वो भी काटेंगे। पर उसकी याचना से हमारा हृदय द्रवित हो चुका था और हमने तय कर लिया था कि हम इसकी चुटिया अब और नहीं काटेंगे लेकिन हमारे और उस दोस्त के बीच जो चोर-पुलिस का खेल चल रहा था उसमें मजा बहुत आ रहा था और उस खेल को मैं खत्म नहीं करना चाह रहा था। भागते-भागते मेरा दोस्त बिना प्लास्टर वाले एक ऐसे कमरे में घुस गया जिसकी दीवारें काफी खुरदुरी थीं। कमरे का दरवाजा बंद करके वह चैन की साँस लेना चाह रहा था और अपना सर दीवार से टिका कर बैठ गया। शायद उसे अंदाज नहीं मिला और उसका सर दीवार से जोर से टकरा गया। उसके सर से खून निकलना शुरू हो गया। उसका सिर चुटिया के ठीक नीचे वाले भाग में फटा था। उसकी चुटिया अगर कटी न होती तो शायद उसका सिर फटने से बच जाता। उस चुटिया के बाद ये चुटिया बचाओ खेल तो खत्म हो गया पर इस घटना से हमें अपने पूर्वजों की लंबी मोटी शिखा रखने की परंपरा का महत्व समझ में आ गया कि कैसे ये शिखा मस्तिष्क की रक्षा करता है।



लाल वाली बस



श्री हरेन्द्र कुमार, व.लेप.

तब स्मार्ट फोन का जमाना नहीं था। हाथ में एक बेसिक फीचर फोन वाला मोबाइल लेकर बिहार के एक छोटे से शहर फुलबड़िया से निकलकर मुरारी लाल पहली बार कोलकाता जैसे किसी बड़े शहर में आया था। शाम से भटकते भटकते रात के 12 बज चुके थे लेकिन कोई भी मुरारी को अपने होटल में कमरा देने को तैयार ही नहीं हो रहा था। यहाँ तक कि मुरारी ज्यादा पैसे भी देने को तैयार था लेकिन फिर भी कोई उसे कमरा देने को तैयार नहीं हो रहा था। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि इस अजनबी शहर में वह कहाँ और कैसे अपनी रात बिताए।

मुरारी अपने शहर का एक होनहार युवा था। बचपन से ही पढ़ने लिखने में होशियार था तो जैसे ही स्नातक की परीक्षा पास की आस पड़ोस के लोगों ने कोलकाता जाकर एमबीए करने की सलाह दे दी। उस समय एमबीए का कोर्स फैशन में था। मुरारी ने भी एक अच्छे कॉलेज का चयन कर एमबीए में दाखिला लेने के लिए फुलबड़िया से कोलकाता की ट्रेन पकड़ ली लेकिन उसे न तो बड़े शहर के नियम कानून का पता था और न ही उसे इस बात का अंदाज था कि कोलकाता कितना बड़ा शहर है। कोलकाता पहुँचते ही सबसे पहले वह अपने कॉलेज का दीदार करने पहुँच गया। अगले दिन से एडमिशन शुरू होना था तो तब तक उसने किसी होटल में रुकने का निर्णय किया। अपने कॉलेज के पास उसने एक टैक्सी वाले को रोका और बोला कि भैया जहाँ सस्ता होटल मिल जाता है वहाँ ले चलिए। होटल मिलने के बाद मुरारी ने वहाँ से जब कॉलेज जाने का तरीका पूछा तो टैक्सी वाले भैया ने बताया कि यहाँ से लाल रंग की बड़ी वाली बस चलती है जो आपको सीधे कॉलेज पहुँचा देगी।

अगले दिन सुबह मुरारी नहा-धोकर तैयार हो गया और कॉलेज के नाम की डिमांड ड्राफ्ट लेकर दाखिला लेने निकल पड़ा। टैक्सी वाले भैया के बताए अनुसार उसने बड़ी वाली लाल रंग की बस पकड़ी और अपने कॉलेज पहुँच गया। दाखिला लेकर मुरारी काफी खुश था, वहाँ खूब घूमा-फिरा और खाया-पिया। घूमते-फिरते जब शाम हो गई तो सोचा कि अब अपने कमरे पर लौटा जाए।

कॉलेज के पास खड़े होकर वह लाल वाली बस का इंतजार करने लगा लेकिन काफी देर हो गई और वो लाल वाली बस आई ही नहीं। फिर वहाँ के आस पास के लोगों से होटल का नाम बताकर वहाँ जाने वाली बस का नंबर पूछा तो उनलोगों ने उस जगह का पता ठिकाना पूछा। पर ये क्या! मुरारी तो उस जगह का नाम ही भूल चुका था। उसने शायद नाम याद रखने की जरूरत ही नहीं समझी थी। कुछ देर याद करने की कोशिश की पर नाम याद ही नहीं आ रहा था। फिर उसने अपनी जेब से कमरे की चाबी निकाला यह सोचकर कि उसमें होटल का पता लिखा होगा पर चाबी रिंग पर भी होटल के नाम के अतिरिक्त और कुछ था ही नहीं। अब उसे सस्ते और महँगे होटल का अंतर समझ में आ रहा था, बड़े शहर और छोटे शहर का अंतर समझ में आ रहा था क्योंकि उसके शहर में छोटा से छोटा होटल भी सिर्फ नाम बताकर ही पहुँचा जा सकता था।

मुरारी इतना तो समझ चुका था कि वह एक बड़ी मुसीबत में फँस चुका है। अब समय की गाड़ी शाम को पीछे छोड़ते हुए रात्रि में प्रवेश कर रही थी जिससे उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। उसे कोई न कोई ठोस कदम तो उठाना ही था। उसे कुछ न सूझा तो टैक्सी वाला उसे जिस रास्ते से लेकर गया था उस रास्ते को याद करके वह अपने होटल तक जाने की कोशिश करने लगा। लेकिन सड़कों और फ्लाइ ओवरों के घने जाल में वह फँस कर रह गया। फिर उसने लोगों से बातचीत करके अपनी समस्या का हल निकालने की कोशिश की। उसने लोगों से पूछा कि यहाँ आस-पास में ऐसी कौन कौन-कौन सी जगहें हैं जहाँ सस्ते होटल मिल जाते हैं। तो लोगों ने कई नाम तो गिनाए लेकिन उन नामों में उसके होटल का जगह वाला नाम नहीं था। फिर उसने उन नामों में से 2 जगह को चुना और वहाँ जाकर खुद देखने का निर्णय लिया कि शायद कुछ पता चल पाए। अब इसके लिए उसे पैसे की जरूरत पड़ी तब उसे एहसास हुआ कि एटीएम कार्ड भी वह अपने कमरे में ही छोड़ आया है। इस बुरे समय में भी एक अच्छी बात यह थी कि उसके जेब में कुछ नकदी पड़े हुए थे। काफी देर घूमने के बाद भी उसके हाथ कुछ न आया। मन में अजीब अजीब तरह के उपाय आ रहे थे। कभी सोचता कि येलो पेज खरीदकर उसमें उस होटल को ढूँढा जाए तो कभी सोचता कि पुलिस से मदद माँगी जाए। इसी उधेड़बुन में रात काफी हो चुकी थी तो अब उसने किसी होटल में रुकने का निर्णय लिया कि अब कल सुबह सोचा जाएगा कि क्या करना है।

सबसे बड़ी समस्या तो अब आनी थी कि होटल में ठहरने के लिए उससे पहचान पत्र माँगा जा रहा था जबकि वह अपना पर्स, जिसमें उसके पहचान-पत्र थे वह अपने होटल के कमरे में ही अपने बैग में ही छोड़ आया था। उसने सिर्फ अपने होटल का पता भूलकर ही मुसीबत मोल नहीं ली थी बल्कि अपना पर्स अपने साथ न रखकर भी एक बहुत बड़ी गलती की थी जबकि सामान्यतः वह अपना पर्स अपने पास ही रखता था। अब तो उसके पास एक ही उपाय था कि किसी तरह वह होटल के मैनेजर को विश्वास दिला सके कि वह इसी देश का एक सामान्य नागरिक है। उसने अपने कॉलेज में जो एडमिशन लिया था उसकी रसीद दिखाकर उसने मैनेजर को समझाने की कोशिश की लेकिन फिर भी कोई समझने को तैयार नहीं था। आखिर काफी मुश्किलों के बाद एक मैनेजर तैयार तो हुआ लेकिन उसने अपने रजिस्टर में मुरारी के नाम की प्रविष्टि नहीं की और उससे कहा कि अगर पुलिस पूछे तो कहना कि अभी अभी आए हो और प्रविष्टि करवानी शेष है।

कमरा तो मिल गया लेकिन आँखों में नींद कहाँ और मन में शांति कहाँ। उसके मन में तो बस यही चल रहा था कि आखिर बिना पता के वह अपने होटल तक पहुँचे कैसे। उसके बैग में सिर्फ कपड़े होते तो उसे छोड़ा भी जा सकता था लेकिन एटीएम कार्ड और पहचान पत्र। इन सबको छोड़ा नहीं जा सकता था। सोचते सोचते सुबह हो गई और सुबह होते ही वह अपने कमरे से निकल कर अपने होटल की तलाश में निकल पड़ा। उसने अपनी खोज की शुरुआत अपने कॉलेज से ही करने का मन बनाया। लोगों से पूछ-पूछ कर कॉलेज जानी वाली बस वह पकड़ता रहा। अंत में वह जिस बस में बैठा उसमें सवार एक यात्री ने उसी जगह का टिकट माँगा जिस जगह पर पहुँचने के लिए मुरारी पिछले 24 घंटे से अपना सर पटक रहा था। आज भाग्य मुरारी के साथ था कि मुरारी जिस बस में बैठा था वही बस उसे उसके सपनों की मंजिल तक पहुँचाने वाली थी। मुरारी ने तनाव में ध्यान ही नहीं दिया था कि वह जिस बस पर बैठा था वह बस वही लाल रंग वाली बड़ी बस थी।



भारत में पर्यटन



श्रीमति पूनम यादव,
व.लेप.

लेह से लेकर दार्जिलिंग तक उत्तर-पूर्व पर्वतीय अंचल है। इस पट्टी में जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और बिहार के पर्वतीय इलाके तथा सात वाहनों के नाम से मशहूर असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, त्रिपुरा, मिजोरम और मणिपुर के राज्य आते हैं। वैसे तो मैं इन सभी राज्यों की लगभग सैर कर चुकी हूँ लेकिन फिर से अपने इस व्याख्यान के द्वारा इनकी सैर की जाए।

कश्मीर

कश्मीर का सौंदर्य वास्तव में देखने योग्य है। वहाँ जाकर मनुष्य अपने में एक थिरकन, एक नवजीवन और अपने को नई दुनिया में पाता है। डल झील में बसा सिकारों का शहर स्थानीय जीवनशैली का बोध कराता है। इस झील में तैरते खेतों का तो अपना ही अलग रंग है। भारत में डल झील के अलावा ऐसे खेत कहीं नहीं हैं। पास ही पहाड़ी पर बना मंदिर बरबस सभी पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। वहाँ से पूरा श्रीनगर नीचे दिखाई देता है। चार चिनारों का मन-मोहक दृश्य देखते ही बनता है। शालीमारबाग, निशान्त बाग पर्यटकों को वहाँ से उठने नहीं देते। वास्तव में कश्मीर के ये बाग अपनी अलग ही पहचान रखते हैं। गुलमर्ग अपने हरे-भरे मैदानों और घुड़सवारी के लिए लोकप्रिय हैं। खिलनमर्ग यहाँ का अन्तिम पड़ाव है।

जम्मू

“धरती के स्वर्ग” कश्मीर जाने का एकमात्र रास्ता जम्मू से है। जम्मू तक सड़क अथवा विमान द्वारा जाया जा सकता है अब तो श्रीनगर एयरपोर्ट भी है। वैसे पठानकोट से होकर भी रास्ता जाता है। तवी नदी के तट पर बसे जम्मू को वाराणसी की तरह मंदिरों का शहर कहा जाता है। वैष्णो देवी का मंदिर यहाँ से केवल 27 मील की दूरी पर स्थित है। जम्मू शहर कैसे बना, इसकी भी रोचक कहानी है। कहा जाता है कि राजा जंबूलोचन अपने राज्य की नई राजधानी बनाने के

लिए स्थान ढूँढ रहा था। एक बार वह शिकार खेलते-खेलते इस प्रदेश में जा पहुँचा तो अचानक उसकी नजर एक बाघ और बकरी पर पड़ी जो एक साथ एक ही घाट पर पानी पी रहे थे। इस दृश्य से प्रभावित होकर उसने इस प्रदेश को अपना नाम देकर अपनी नई राजधानी घोषित कर दिया।

लेह (लद्दाख)

केरल से कश्मीर तक और कच्छ से कोहिमा तक फैला भारत देश अपनी अनेक विशेषताएं लिए हुए है। धरती के स्वर्ग कश्मीर का लेह संभाग समुद्र तल से 11,300 फुट की ऊँचाई पर बड़ी विलम कंदराओं, घाटियों, पहाड़ियों का एक दुर्गम और शीत प्रदेश है और पर्यटकों का आकर्षण का केन्द्र है। कश्मीर के बाहर से लेह जाने का एकमात्र साधन दिल्ली से लेह और जम्मू वायुमार्ग है। दिल्ली से लेह तक की उड़ान में मात्र 1 घंटा 10 मिनट लगता है। वायुमार्ग से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की चोटी पर पड़ी बर्फ का सौंदर्य देखने लायक होता है। पर्यटकों को लेह जाने में कुछ विशेष सावधानियाँ बरतनी आवश्यक है जैसे अधिक ऊँचाई पर होने के कारण लेह में आक्सीजन बहुत कम मात्रा में होती है। अतः लेह पहुँचकर कम से कम 24 घंटे का आराम करने की सलाह दी जाती है। लेह प्रवास के दौरान दौड़ना और तेज नहीं चलना चाहिए क्योंकि इसमें ऑक्सीजन की अधिक आवश्यकता होती है और वहाँ ऑक्सीजन की मात्रा पर्याप्त नहीं होती है।

अमृतसर

भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर एक प्रमुख नगर है। यह सिक्खों का प्रमुख नगर तथा तीर्थस्थल है। इसकी नींव सिक्खों के चौथे गुरु रामदास जी ने डाली, उस समय इसका नाम 'गुरु का नगर' था। गुरुजी ने यहाँ पर मंदिर बनाने से पूर्व एक सरोवर बनाया जिसका नाम उन्होंने 'अमृत का सर' रखा इसलिए बाद में यह नगर अमृतसर नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ स्वर्ण मंदिर दर्शनीय योग्य है।

जिम कार्बेट नेशनल पार्क

भारत का सबसे प्राचीन और जंगली जानवरों के लिए प्रसिद्ध इस पार्क का नाम प्रसिद्ध शिकारी, लेखक और सरयाणवादी जिम कार्बेट के नाम पर पड़ा। इसका निर्माण 1935 में हुआ। 15208 वर्ग किलोमीटर में फैला यह ऐतिहासिक पार्क रामगंगा नदी की पाटलीटून घाटी और

शिवालिक पहाड़ियों की वादगिरियों से घिरा हुआ है और नैनीताल और पौड़ी गढ़वाल जिलो में स्थित है। यहाँ बाघ, घड़ियाल, मगरमच्छ, हिरन, हाथी, चीता, रीछ, जंगली सूअर, लघुपूच्छ वानर, नेवला, अजगर और 585 जातियों के पक्षी पाए जाते हैं। यह पार्क 400 से 1100 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ 15 नवम्बर से 15 जून तक जाया जा सकता है। यहाँ जाने के लिए प्रवेश शुल्क लगता है।

गंगटोक

अपूर्व प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर सिक्किम का चौथाई भाग वन है। यहाँ सात और सेमर के पेड़ों की अधिकता है। तितलियों का तो यहा मेला लगा रहता है। गंगटोक सिक्किम की राजधानी है। गंगटोक का शाब्दिक अर्थ है “ऊँचा पहाड़”। यह शहर विश्व की तीसरी ऊँची चोटी कंचनजंघा की तलहटी में समुद्र तट से 1525 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह भारत-चीन के निकट यहाँ जाने का उत्तम समय मार्च से जून के प्रथम सप्ताह तक या अक्टूबर से नवम्बर तक है।

धर्मशाला

धौलधार पर्वत श्रेणियों के मध्य, भारत के प्राचीन पर्यटन स्थलों की श्रेणी में आने वाला धर्मशाला, कांगड़ा घाटी का एक दिलकश, लुभावना और सुरभ्य पर्यटन स्थल है। यह अंग्रेजों का प्रिय पर्यटन स्थल था। धर्मशाला जाने के लिए गगल तक हवाई जहाज द्वारा जा सकते हैं। वहाँ से यह स्थान केवल 13 किलोमीटर पर है। रेल द्वारा पठानकोट तक जाया जा सकता है। धर्मशाला राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 1 और 21 के द्वारा पठानकोट जालंधर और मंडी से जुड़ा हुआ है। धर्मशाला में मेकलाडगंज, झगसुनाथ मंदिर, सेंट जॉन्स चर्च, कुणाल पथरी, बार मेमोरियल दर्शनीय स्थल है। तिब्बत के धार्मिक गुरु दलाई लामा यहीं रहते हैं।

शिमला

शिमला के बारे में लगभग सभी जानते हैं। पहले शिमला नेपाल महाराज के अधीन था। मगर बाद में अंग्रेजो ने युद्ध करके इस पर अपना अधिपत्य कर लिया। यह समुद्र की सतह से 7762 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। अंग्रेजों ने इसे भारत की गर्मियों की राजधानी बनाया था। शिमला श्यामला का अपभ्रंश रूप है। पहले इस नगर को श्यामला देवी के नाम पर श्यामला कहा जाता था। सन् 1819 में सबसे पहले लेफ्टिनेंट ने यहाँ एक छोटा-सा घर बनाया। इसके बाद तो यहाँ

मकान पर मकान बनने लगे। वैसे तो शिमला का हर मौसम में अपना ही रंग होता है। परन्तु यहाँ जाने का उपयुक्त समय सितंबर-अक्टूबर अथवा अप्रैल-जून है। शिमला में आप रिज, माल, प्रस्टपेक्ट हिल, जाखू हिल, चडविक जल प्रपात, संग्रहालय, तारा देवी मंदिर, करेगनानी, कुफरी, रामपुर, मशोवरा आदि देख सकते हैं।

डलहौजी

हिमाचल प्रदेश में डलहौजी अपनी स्वास्थ्यवर्धक हवा, रमणीक दृश्यों और अपने लंबे-लंबे सैरगाहों के लिए प्रसिद्ध और लोकप्रिय है। डलहौजी का नाम 10वें अंग्रेज गवर्नर-जनरल लार्ड डलहौजी के नाम पर पड़ा। सन् 1954 में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू भी यहाँ आए तो वहाँ की प्राकृतिक छटा और वातावरण से बहुत प्रभावित हुए। यहाँ पंचकुला, बकरोटा, डाइनकुंड, कालाटोप और खजियार देखने योग्य स्थान हैं।

नैनीताल

तालों की नगरी नैनीताल की खोज एक अंग्रेज यात्री ने की थी। यह 1,938 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ गर्मियों में अधिकतम तापमान 26.7 डिग्री से तथा न्यूनतम 10.6 डिग्री से तक रहता है तथा सर्दियों में अधिकतम 15.6 डिग्री से. तथा न्यूनतम 2.8 डिग्री से. तक चला जाता है। यहाँ की औसत वर्षा 2794 मिलीमीटर अर्थात् 110 सेंटीमीटर तक नापी गई है। यहाँ जाने का सबसे अच्छा मौसम मार्च से जून तथा मध्य सितम्बर से अक्टूबर तक होता है। यहाँ हवाई जहाज, रेल, बस और कार आदि से जाया जा सकता है। पतनगर निकटतम हवाई अड्डा है। यहाँ बहुत से दर्शनीय स्थल भी हैं, नैना पीक, सरिया काठा, स्नो व्यू, दोरोयी सीट, सेंडस यंड, हनुमान गढ़ी, किलबरी, खुर्पाताल, भोवाली, भीमताल, नौकुचिया ताल, सतताल, रामगढ़, मुक्तेश्वर और ज्वोल कोट।

इस छोटे से लेख द्वारा सभी दर्शनीय स्थलों का उल्लेख करना तो संभव नहीं है इसलिए अंत में मैं पर्यटन के दौरान कुछ सावधानियों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझती हूँ। सबसे प्रथम आप जहाँ की भी यात्रा करना चाह रहे हैं उसकी पूर्व योजना बना लें तथा यह देखें कि आप किस मौसम में जा रहे हैं तदनुसार, कपड़े आदि का बंदोबस्त करें। जिस

जगह जा रहे हैं, वहाँ चिकित्सा आदि की स्थिति क्या होगी। अतः आवश्यकतानुसार दवाइयाँ भी अपने साथ रखें कम से कम सामान लेकर चलने में पर्यटन का मजा और ही है।

पर्यटन के दौरान खुद मस्त और दूसरों को भी मस्त रहने दीजिए। आप अपनी यात्रा को यादगार भी बनाना चाहेंगे। अतः अपने साथ कैमरा ले जाना न भूलें तथा आवश्यकतानुसार मनमोहक दृश्यों को कैमरे में कैद कर लीजिए। परन्तु व्यर्थ में कैमरे का प्रयोग न कीजिए। यादगार क्षणों को भी आप चुन सकते हैं। हाँ, प्रकृति की गोद में आपको जो भी अच्छा लगे उसे अवश्य समेट लीजिए।



किस्सा कॉफी का



श्री योगेश लक्षकार,
कनिष्ठ अनुवादक

अरब देशों के इतिहास में एक दौर ऐसा भी था जब पति अपनी पत्नी को कॉफी लाकर ना दे तो वह उसके खिलाफ तलाक की अर्जी दायर कर सकती थी। आज विश्व में 2 अरब कप कॉफी प्रतिदिन पी जाती हैं। क्या आप जानते हैं कि कॉफी का इतिहास क्या है? कभी शैतान की ड्रिंक कहे जाने वाली कॉफी कैसे लोगों की सबसे पसंदीदा पेय पदार्थ बनी। आइए हम इसके इतिहास की ओर चलते हैं।

कॉफी शब्द अरबी भाषा के शब्द कहवा से आया है। कॉफी पीने का चलन सबसे पहले मध्य पूर्व के देश यमन में शुरू हुआ। इस्लामिक देशों में खास रूप से सूफी संत इसका उपयोग करते थे क्योंकि इस्लाम में शराब पीना वर्जित है। यमन तक कॉफी कैसे पहुंची इस बारे में कहा जाता है कि 900 ईस्वी के आसपास इथियोपिया की पहाड़ियों में पहली बार कॉफी की खोज हुई। लोक कथाओं के अनुसार कलदी नाम के गडरिया ने एक झाड़ी की खोज की, जिस के बीजों से बाद में विभिन्न प्रकार से कॉफी का निर्माण हुआ। इसके बीजों को भून कर पीसा गया और पानी में मिला लिया गया। इस प्रकार कॉफी का पहला कप तैयार हुआ।

कॉफी की शुरुआत की एक और कहानी है जो 12 वीं सदी के आसपास की बताई जाती है। मोरक्को के सूफी संत अल सदीली थे, उनका एक शिष्य जो मक्का में रहता था उसका नाम उमर था। एक बार उमर को शहर से निकाल दिया गया और वह जंगलों में जाकर रहने लगा। वहां उसने कॉफी के बीजों की खोज की। इस खोज के बाद वापस मक्का पहुंचने पर उमर को संत की उपाधि दी गई। दुनिया का पहला कॉफी हाउस इस्तांबुल में 1475 में खुला। ऐसे कई कॉफी हाउस खुले जहां शाम को इकट्ठा होना और कॉफी पीते हुए चर्चा करना संस्कृति का हिस्सा बना। मध्य पूर्व से कॉफी यूरोप तक पहुंची।

किंतु यूरोप से पहले भारत में कॉफी की बात करते हैं। अंग्रेजों से पहले ही भारत में कॉफी का चलन शुरू हो गया था, कॉफी के भुने हुए बीजों को मध्य पूर्व के देशों से आयात किया जाता था। कॉफी बहुत कीमती थी अतः इसके भुने हुए बीज ही देश से बाहर ले जाए जा सकते थे, क्योंकि भुने हुए बीजों से पेड़ नहीं उगाए जा सकते। अतः भारत में कॉफी का पौधा एक दूसरे रास्ते से पहुंचा।

16वीं शताब्दी में कर्नाटक के चिकमंगलूर में सूफी फकीर बाबा बुदन रहते थे। एक बार वे हज यात्रा पर मक्का गए, वहां से लौटते वक्त कॉफी के 7 बीज अपने लबादे (चोगा) में छुपा कर ले आए तथा चंद्रगिरी की पहाड़ी पर अपने गुफा के बाहर वे बीज बो दिए। इस प्रकार भारत में कॉफी का प्रचलन शुरू हुआ तथा स्थानीय लोग कॉफी की खेती करने लगे। 21वीं सदी में भी इन पहाड़ियों को बाबा बुदन की पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है तथा आज भी यहां कॉफी की खेती होती है। इसी दौर में मुगल दरबार में भी कॉफी के सेवन का जिक्र मिलता है। वर्ष 1616 में ब्रिटिश राजदूत दल के साथ भारत आए एडवर्ड टैरी ने अपने संस्करण में लिखा है -

लोग सख्ती से धार्मिक परंपराओं का पालन करते हैं, वे शराब नहीं पीते लेकिन शराब के बदले एक काला पेय पीते हैं, काले बीजों को पानी में उबालकर यह पेय बनाया जाता है कहा जाता है कि इससे पाचन अच्छा होता है और खून की सफाई होते हैं।

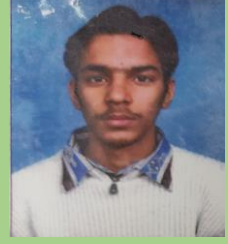
आम लोग इसे उच्च वर्ग का पेय मानते थे। 17वीं सदी तक शाहजहांनाबाद (दिल्ली) में कई कॉफी हाउस खुले, जिन्हें कहवा घर कहा जाता था। कॉफी के सबसे बड़े शौकीनों में बंगाल के नवाब अलीवर्दी खान का नाम प्रमुख रूप से गिना जाता है। 1750 के आसपास दिल्ली से लेकर दक्षिण भारत तक कॉफी का खूब चलन था, किंतु धीरे-धीरे कॉफी का चलन कम होता गया। इसका मुख्य कारण था अंग्रेजों का भारत पर पकड़ बनाना। अंग्रेज कॉफी का व्यापार तो करते थे किंतु उनका मुख्य पेय पदार्थ चाय था। इस प्रकार लोगों की जबान से कॉफी का स्वाद कम होता गया। इसके बाद लोगों की जबान पर कॉफी की लगभग 150 वर्षों बाद वापसी हुई। इसकी वापसी भारत में कैसे हुई इसके लिए हमें कुछ और जानना होगा। यूरोप में कॉफी इटली के रास्ते पहुंची। जैसे ही यह वहां आम होने लगी रोमन कैथोलिक चर्च ने यह कहते हुए इस पर रोक लगा दी कि कॉफी एक मुस्लिम पेय पदार्थ है, अतः ईसाइयों को इसे नहीं पीना चाहिए। उन्होंने इसे शैतान की पसंदीदा ड्रिंक घोषित कर दिया। बाद में पोप क्लेमेंट अष्टम ने कॉफी

को इसाई ड्रिंक घोषित किया और इस प्रकार यह पूरे यूरोप में फैल गई। यूरोप में बहुत सारे कॉफी हाउस खुले। चूंकि कॉफी हाउस बुद्धिजीवियों के अड्डे होते थे अतः ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय ने इसे देशद्रोह को बढ़ावा देने का मूल कारण घोषित करते हुए प्रतिबंधित करने की कोशिश की। इन सब प्रतिबंधों के बावजूद कॉफी प्रसिद्ध होते हुए ब्रिटेन के सभी उपनिवेशों में पहुंच गई। अमेरिका भी इनमें से एक था। आज अमेरिका सबसे ज्यादा कॉफी पीने वाले देशों में से एक है, किंतु 1770 से पहले यहां भी चाय ही पी जाती थी। फिर 1773 ईस्वी में अमेरिका में चाय पर लगाए गए टैक्स के विरोध में लोग बोस्टन में खड़े जहाज पर चढ़ गए तथा चाय की 342 पेटियों को समुद्र में फेंक दिया। इनमें लगभग 90,000 पाउंड यानी 45 टन चाय थी, जिसकी कीमत उस समय लगभग 10 लाख डॉलर थी। इसके बाद अमेरिका में बड़े पैमाने पर चाय का विरोध हुआ तथा लोगों ने कॉफी को अपना लिया।

बात कॉफी के स्वाद की कॉफी के कड़वे स्वाद के कारण लोगों द्वारा इसे अधिक पसंद नहीं किया जाता था । किंतु फिर 19वीं सदी में इटली में एक्सप्रेसो मशीन बनी जिसमें तेज दबाव से कॉफी के बीजों पर पानी डाला जाता था व कॉफी तैयार की जाती थी। मशीनों के आगमन से कॉफी बनाना आसान हुआ तथा लोग इसे अपनाने लगे । आज लगभग हर देश में कॉफी पी जाती है और इसकी हजारों किस्में मौजूद हैं तथा इसे बनाने के तरीके भी विभिन्न हैं । कॉफी की किस्म के अनुसार इसकी अलग-अलग दर भी है जैसे थाईलैंड की ब्लैक आइवरी कॉफी की कीमत 1.5 लाख रुपए प्रति किलो अर्थात 4,000 रुपए का एक कप है।

हमने 18 वीं सदी के मध्य में कॉफी के गायब होने की बात कही , किंतु आज भी दक्षिण भारत में कॉफी मुख्य पेय पदार्थ हैं । इसका श्रेय इंडिया कॉफी हाउस को जाता है । 1936 में ब्रिटिश सरकार ने कॉफी की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए कॉफी हाउस की शुरुआत के प्रयास किए तथा चर्चगेट, मुंबई में सितंबर, 1936 में भारत का पहला इंडिया कॉफी हाउस खुला तथा धीरे-धीरे भारत में इसकी कई शाखाएं खुली तथा पूरे भारत में कॉफी पी जाने लगी । कॉफी के उत्पादन में भारत आठवें स्थान पर आता है। दक्षिण भारत के अधिकतर राज्यों में यह मुख्य पेय पदार्थ है। हालांकि भारत के अधिकांश राज्यों में कॉफी के बजाय चाय पीना पसंद किया जाता है, किंतु बदलते समय के साथ कॉफी का चलन भी बढ़ता जा रहा है।

माता-पिता



श्री सुरेन्द्र कुमार
लेप.

कहते हैं समय एक सा नहीं रहता, समय हर समय को बदल देता है और इसमें कोई दो राय भी नहीं है ।

एक वक्त वो भी था जहाँ रिश्तों की अहमियत होती थी उनका मान सम्मान होता था । छोटे भाई के लिए बड़ा भाई पिता के समान होता था, माता-पिता न केवल भगवान का रूप माने जाते थे बल्कि उन्हें उनसे भी ऊपर का दर्जा दिया जाता था । माता-पिता के वचनों को सत्य करने के लिए बच्चे अपना सब कुछ कुर्बान तक कर देते थे ।

श्री राम ने माता की इच्छा और पिता के वचन का मान रखने के लिए हँसी खुशी 14 वर्षों का वनवास सहर्ष स्वीकार कर लिया था, तो लक्ष्मण जैसे भाई ने भाई की सेवा और साथ के लिए राज महल के सब सुख त्याग दिए । पर वह समय और था, दौर कुछ और था ।

आजकल का समय वह समय नहीं रह गया । आजकल के समय में तो लोग न जाने किस खुशी किस सुकून की तलाश में अपनों को ही पीछे छोड़कर आगे निकलते जा रहे हैं ।

आज के बदलते दौर में जहाँ सब खुद को मॉडर्न दिखाने की चाह में आगे बढ़ते जा रहे हैं, वही रिश्तों की अहमियत को भी भुलाते जा रहे हैं । आज के समय में रिश्ते पहले जैसे नहीं रह गए हैं ।

पहले के समय में लोगों के पास बड़े घर नहीं होते थे, एक छोटे से घर में दादा-दादी, चाचा-चाची, माँ-बाप, भाई-बहन सब साथ रहते थे पर समय बदला तरक्की हुई, तो छोटे घरों की जगह बड़े घरों ने ले ली, और जैसे जैसे घर बड़े होते गए , रिश्ते भी कही न कही उतने ही दूर होते गए ।

यूँ तो बदलते वक्त ने सब पर अपना हक जताया है पर सबसे ज्यादा मेरे विचार से मा-बाप

और बच्चों के रिश्तों पर इसका असर हुआ है | अब चाहे इसे बदलते समय का हेर-फेर समझा जाये, या नया-पुराना जमाना कहा जाये, या नई पुरानी सोच कही जाए, या यूँ कह लिया जाये की बच्चे कुछ ज्यादा ही मॉडर्न और प्रैक्टिकल होते जा रहे हैं | जो भी कहिये पर यह तो सच ही है कि अधिकांश घरों का यही सत्य है |

आज के समय में भी मा-बाप के लिए बच्चे सबसे पहले आते हैं | आज भी बच्चों के लिए मा-बाप खुद से पहले सोचते हैं, बच्चों की खुशी का ध्यान खुद की खुशी से पहले रखते हैं उनके लिए क्या अच्छा है क्या बुरा हमेशा इस चिंता में रहते हैं |

बच्चों के भविष्य को सुधारने-संवारने के लिए माँ-बाप अपना वर्तमान, अपनी खुशी, अपना सुख चैन सब कुछ भूल जाते हैं | फिर वही बच्चे बड़े होकर उनसे ही कहते हैं कि आपने हमारे लिए किया ही क्या है, जो सबके माँ-बाप करते हैं , वही सब आपने किया है कोई एहसान थोड़े किया है , यह सब आपका फर्ज था | ऐसे बच्चे जो उन्हें उनका फर्ज बता रहे हैं, कोई उनसे पूछे कि क्या उन्होंने माता-पिता के प्रति अपने फर्ज निभाए हैं कभी।

माँ बच्चों की गलतियों पर पिता की मार से बचाती है, गलतियां न दोहराने की सीख देती है, अच्छे बुरे का ज्ञान देती है वह माँ ही होती है , जो बच्चों की पहली दोस्त होती है, उनकी पहली गुरु होती है, उनकी चिकित्सक होती है, पर न जाने ऐसा क्या हो जाता है कि जब वही बच्चे बड़े होते हैं अपने पैरों पर खड़े होने लगते हैं तो वही माँ उनके लिए गुरु दोस्त तो बहुत दूर की बात माँ तक नहीं रहती | जब बच्चे छोटे होने पर बोलना तक नहीं जानते तब भी वह माँ होती है जो उन बच्चों की बातें बिना बोले समझ जाती है | जब बच्चे खेल कूद पढ़ाई आदि के चक्कर में खाना नहीं खाते तब वो माँ ही होती है जिसे तब तक चैन नहीं आता जब तक वो उन बच्चों को खाना न खिला दें | आज के इस ज़माने में कुछ माताएं जब बच्चों पर आश्रित होने लगती हैं तो खाने तक को तरसती हैं और बच्चे अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, पार्टियों आदि में मग्न रहते हैं |

वह पिता जो यह सोचकर रातों की अपनी नींद खोता है , दिन में दौड़-धुप करता है , अपना खून - पसीना पानी की तरह बहा देता है ताकि उसके बच्चे नए ज़माने के साथ चलने लायक बने | खुद को नए ज़माने में होने के बावजूद पिछड़ा हुआ ना महसूस करें बल्कि नए ज़माने के तौर तरीकों और लोगों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चल सके, इसके लिए दिन रात परिश्रम करता है।

काम से थका-हरा लौटने पर भी बच्चों की जिद्द के लिए कभी कहीं घुमाने ले जा रहा है कभी कहीं | खुद के पास पैसे न होते हुए भी या कम होते हुए भी बच्चों को इसका एहसास तक नहीं होने देता। बच्चों को नए कपडे देने के लिए चाहे उन्हें अधिक से अधिक काम करना पड़े , चाहे एक खिलोने की जिद्द को पूरा करने के लिए पैदल काम पर जाना पड़े, पर इस से उस पिता को कोई फर्क नहीं पड़ता | वह खुशी खुशी अपने बच्चों के लिए यह सब करता है ताकि उसके बच्चों की सब इच्छाएं वो पूरी कर सके |

वही बच्चे जब बड़े होते हैं , खुद कमाने लगते हैं तो उस बूढ़े हो रहे पिता के किए सब कामों को, उनके प्यार को, उनका फर्ज था यह बोलकर पल्ला झाड़ लेते हैं |

क्या सब फर्ज माता-पिता के ही होते हैं बच्चों के प्रति ?

क्या बच्चों का कोई फर्ज नहीं होता अपने माता-पिता के लिए ?

माता-पिता उस समय से, जब बच्चे खुद से चल फिर नहीं सकते, उठ बैठ नहीं सकते, कुछ बोल तक नहीं सकते और उस समय तक जब तक माता-पिता का शरीर उनका साथ देता है अपने उन बच्चों का सहारा बने रहते हैं, उन्हें ज़िन्दगी की दौड़ में कभी गिरने नहीं देते और यदि गिर जाये तो फिर से उठ के चलने की उन्हें राह दिखाते हैं, हिम्मत देते हैं उन्हें | जब बच्चों का समय आता है उनकी देख-रेख का, उनका ध्यान रखने का, तो उन्हें घर के किसी कमरे में पड़े बेकार सामान की तरह छोड़ देते हैं या किसी वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं क्योंकि बच्चों के पास उनके लिए इतना समय नहीं |

किसी ने सच ही कहा है कि जब किसी को समय न देना हो तो समय ही बहाना बन जाता है और सच तो यह है कि इंसान जिस चीज को चाहता है , जिसकी कद्र करता है, अहमियत समझता है, समय भी उसी के लिए निकाल पाता है या निकालता है |

जब बच्चे छोटे होते हैं तो माता-पिता का साथ चाहते हैं, उनका प्यार चाहते हैं, अपनी सभी ख्वाहिशें पूरी करवाना चाहते हैं, जो माता-पिता खुशी-खुशी करते हैं | पर जब बुढ़ापे में माता-पिता अपने उन्हीं बच्चों से पैसा, चीजों के बजाय उनका साथ मांगते हैं, उनका प्यार मांगते हैं, तो वही बच्चे उन्हें यह सब क्यूँ नहीं दे सकते | क्यूँ उनका दिल आसानी से दुखा जाते हैं, और उन्हें उनके हाल पर छोड़ देते हैं, क्यूँ एक बार भी नहीं सोचते कि जब उन्हें माता-पिता की जरूरत थी, तो माता-पिता उनके लिए हमेशा उनके साथ थे |

इतना जरूर कहना चाहूँगा कि माता-पिता दुनिया की तमाम धन-दौलत से बड़ी दौलत है | उनका हमेशा मान-सम्मान करें, क्योंकि वह माता-पिता ही होते हैं जो बच्चों की छोटी से छोटी खुशी के लिए अपनी बड़ी से बड़ी खुशी सुख चैन सब त्याग देते हैं | बदले में बच्चों की कामयाबी और अपने लिए उनसे प्यार के अलावा कभी कुछ नहीं चाहते |

वैसे जिसने भी कहा है गलत नहीं कहा है कि दुनिया के तमाम ऐशो-आराम, सुख-सुविधाएं, कामयाबी, धन दौलत आप सब कुछ खोने के बाद, फिर से दोबारा पा सकते हैं, पर माता-पिता वो दौलत है जो एक बार चली जाए तो दोबारा नहीं मिलती | मैं यह नहीं कहता और न यह कहना सच होगा कि दुनियां में सारे माता-पिता और बच्चों का आपसी रिश्ता ऐसा है पर हां आज के इस बदलते समय में, बदलते मॉडर्न ज़माने में अधिकांश का ऐसा ही है।

इसलिए इतना जरूर कहना चाहूँगा की मॉडर्न बनने के नाम पर, या समय के अभाव के नाम पर, अपने माता-पिता का तिरस्कार न करें, उन्हें अकेला न छोड़ दें | कहते हैं बुढ़ापे में बचपन एक बार फिर लौट आता है और जैसे अपने बचपन में बच्चों को अपने माता-पिता के साथ प्यार की आवश्यकता होती है, वैसे ही बुढ़ापे में उन्हें भी बच्चों से सिर्फ प्यार और साथ की ही आवश्यकता होती है न की आपकी धन-दौलत की | इसलिए हमेशा माता-पिता का मान-सम्मान करें और अपना वक्त और प्यार उन्हें दें, क्योंकि वह आपसे इस से ज्यादा और कुछ चाहते ही नहीं हैं।

जिस घर में माता-पिता हँसते हैं

भगवान भी उसी घर में बसते हैं।



सच्चे सुख का मार्ग



श्रीमति कृष्णा सोनी
व.लेप.अ. (सेवानिवृत्त)

संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख, शान्ति, आनन्द एवं खुशी का अभिलाषी है। संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो दुख एवं अशान्ति चाहता हो। जीवन की प्रत्येक कार्यवाही, प्रत्येक प्रयत्न सुख और आनन्द की प्राप्ति के लिये ही होता है क्योंकि उसे किसी प्रकार के दुख एवं शोक का मुख न देखना पड़े। इस सच्चे सुख आनन्द के लिये दिन-रात कमाता हैं। अधिक से अधिक सामान एकत्र करता है। किन्तु यदि संसार की स्थिति का अवलोकन किया जाये तो देखने में यही आता है कि इतना यत्न करने के उपरान्त भी अधिकतर मनुष्यों का जीवन दुखों एवं चिन्ताओं से घिरा हुआ है। कोई भी मनुष्य दुख नहीं चाहता, परन्तु फिर भी मनुष्य को वास्तविकता की समझ नहीं आती कि ऐसा क्यों है। मनुष्य का विचार यही है कि जितना अधिक उसके पास धन होगा उतना ही वह अधिक सुखी होगा। किन्तु भगवान का यह फरमान है कि यदि धन-सम्पत्ति जागतिक पदार्थ की पदार्थों और शारीरिक एवं ऐन्द्रिक रसभोगों में सच्चा सुख-आनन्द होता तो फिर संसार में बड़े-बड़े धनवान अवश्य ही सुखी होते। किन्तु क्या ऐसा है। ऊपर से ठाठ-बाट देखकर ऐसा अवश्य-प्रतीत होता है कि वे सुखी हैं परन्तु यदि उनके अन्तर्मानस में झाककर देखा जाये तो ज्ञात होगा कि उनके दिल में लाखों दुखों और चिन्ताओं ने अपना घर बना रखा है। उन्हें भी हर समय कोई न कोई चिन्ता, दुख सताता ही रहता है। उदाहरण के लिये राजा रावण धन का कूबेर एवं सोने की का राजा था किन्तु इन सबके होते हुए भी सुख और आनन्द से वंचित था।

अभिप्राय यह है कि सच्चा सुख यदि कहीं है तो वह परमात्मा की भक्ति में है। जिसके हृदय में परमात्मा की भक्ति बस जाती है। काम, क्रोध दुष्ट उसके निकट जाने का साहस नहीं करते। उसे स्वप्न में भी संसार का कोई दुःख नहीं सताता। इसलिए मनुष्य यदि सच्चा सुख आनन्द पाना चाहता है तो उसे चाहिये कि वह सन्तों का संग करें तभी का दर्शन सुलभ हो सकता है। भगवान की कृपा दृष्टि का पात्र बनते ही जीव परम सुख, दिव्य आनन्द और खुशियो से भरपूर हो जाएगा।

भवसागर से पार के साधन



श्रीमति कृष्णा सोनी
व.लेप.अ. (सेवानिवृत्त)

यदि कोई मनुष्य समुंद्र या नदी के पार जाना चाहे तो उसके लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है। (1) नाव (2) अनुकूल वायु (3) केवट। यदि नाव न हो तो मनुष्य समुद्र को पार नहीं कर सकता। यदि वायु अनुकूल न हो तो नाव के भटकने का भय रहता है। इसी प्रकार यदि केवल न हो तो नाव को कौन पार लगायेगा। इसलिये इन तीन चीजों का होना आवश्यक है तभी मनुष्य पार जा सकता है।

ठीक इसी प्रकार भवसागर को पार करने के लिये भी इन तीन चीजों का होना आवश्यक है परन्तु भवसागर को पार करने के लिये नाव, वायु और केवट कौन हैं यह जान लेना भी आवश्यक है।

- 1) मनुष्य का शरीर भवसागर से पार होने के लिये नाव है। मानुष-जन्म को भवसागर से पार होने के नाव इसलिये कहा गया है क्योंकि चौरासी लाख योनियों में मानुष-जन्म ही एक ऐसा जन्म है जिससे जीव संसार सागर से पार हो सकता है। और चौरासी के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सकता है अन्य किसी योनी में यह कार्य नहीं कर सकता ।
- (2) केवल मानुष-जन्म प्राप्त हो जाने मात्र से ही जीव भवसागर से पार नहीं जा सकता इसके लिये अनुकूल वायु की भी आवश्यकता है। वह क्या है वह है भगवान की कृपा। प्रभु की कृपा से जब मनुष्य को सत्संग की प्राप्ति होती है तभी उसके अन्दर विवेक शक्ति जागृत होती है जिससे उसे यह समझ आती है कि मानुष जीवन का उद्देश्य केवल धन संचित करना, पद-प्रतिष्ठा इत्यादि हासिल करना नहीं है अपितु चौरासी के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना है। यह सब सत्संग के बिना कृपा प्राप्त नहीं होती।

- (3) जैसे केवट के बिना नाव नहीं चलती वैसे ही गुरु के बिना कोई भी मानुष सागर से पार नहीं उतर सकता। जब यह तीनों चीजें जीव को मिल जायें अर्थात् मानुष-जन्म भी प्राप्त हो जाये, सत्संग में बैठना भी मिल जाये तथा भगवान की शरण संगति भी नसीब हो जाये तो इससे बढ़कर जीव का सौभाग्य क्या होगा। जो मनुष्य ऐसे साधन पाकर भी भवसागर से पार न हो तो वह मनुष्य मन्दबुद्धि है।



पुस्तकों में घटती रुचि



सुश्री मयंका अधलखा

स.प्र.अ.

आज के समय में पुस्तक पढ़ने की इच्छा धीरे-धीरे कम हो रही है इसके पीछे कई कारण हैं। वर्तमान समय में मनोरंजन के साधनों में अत्यधिक वृद्धि हुई है जैसे वीडियो गेम्स, सोशल मीडिया आदि। लोगों को इंटरनेट का उपयोग करके और ई-पुस्तकें डाउनलोड करके सूचना प्राप्त करना आसान लगता है। इन सब विकल्पों ने बच्चों से लेकर समाज के युवा वर्ग को अपनी ओर आकर्षित किया है और यही कारण है कि विद्यार्थी पुस्तकों से ज्यादा समय इन माध्यमों में बिता रहे हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं। जब भी हमें उनकी आवश्यकता होती है वे हमारे लिए उपलब्ध होती हैं। किताबें हमारी आसपास की दुनियां को समझने, सही और गलत के बीच निर्णय लेने में हमारी मदद करती हैं। वे हमारे आदर्श, मार्गदर्शक या सर्वकालिक शिक्षक के रूप में भी हमारे जीवन में शामिल होती हैं। निर्मल वर्मा ने ठीक ही कहा है,

“किताबें मन का शोक, दिल का डर या अभाव की हूक कम नहीं करतीं, सिर्फ सबकी आंख बचाकर चुपके से दुखते सिर के नीचे सिरहाना रख देती हैं।”

किताबें पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में गुणात्मक परिवर्तन आता है। वे हमारे लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं साथ ही यथा समय लक्ष्य प्राप्ति में भी मददगार हैं। हममें से कई लोगों को अपने खाली समय में या सोने से पहले किताबें पढ़ने की आदत होती है क्योंकि पढ़ने से अवांछित तनाव पर काबू पाने में भी मदद मिलती है। यह हमें एक अलग ही दुनिया में ले जाती है जिसे हम सुकून की दुनिया कह सकते हैं। लोगों के विपरीत किताबें कभी भी बदले में कुछ भी नहीं मांगती, बल्कि हमारे ज्ञान और रचनात्मकता को बढ़ाने में हमारी मदद करती हैं।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि किताब पढ़ने से हम पूरी तरह से एक अलग दुनिया में चले जाते हैं जहां हम दुनिया भर से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों वाले लोगों के संपर्क में आते हैं। विभिन्न पात्रों को पढ़ते समय हम उनमें से एक बन जाते हैं और कई मायनों में उससे संबंधित होने की कोशिश करते हैं। जो भी हम पढ़ते हैं हम निश्चित रूप से उसमें सर्वश्रेष्ठ और विभिन्न स्थानों जैसे मध्य पूर्व, एशिया, यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका आदि में शामिल होने की कोशिश करते हैं। हमारा दिमाग भी बहुत अधिक मात्रा में उस ज्ञान से अवगत हो जाता है जो किताबों में लिखा होता है और जो हमें गहरे विचारों के साथ जुड़ने में मदद करता है और साथ ही भावनात्मक रंगों का विविधतापूर्ण मिश्रण भी देता है।

न केवल ज्ञान बल्कि हम किताबों को पढ़ने से मनोरंजन भी प्राप्त करते हैं। लघु कथाएँ, उपन्यास, यात्रा, कविताएं और यहां तक कि कॉमिक किताबें भी हमें संपूर्ण मनोरंजन प्रदान करती हैं। यह हमारे दिमाग को भी आराम देती हैं क्योंकि हम अपनी चिंताओं को पीछे छोड़ देते हैं और उस आभासी दुनिया के साथ जुड़ जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह हमारे दिमाग को ऐसे तरीकों से जोड़ती है जो शायद कोई अन्य माध्यम नहीं करता है।

पुस्तक पढ़ने से ना केवल हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है अपितु हमारे सोचने समझने के नजरिए में भी वृद्धि होती है, परंतु यह बहुत खेद की बात है कि वर्तमान समय में हम पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं। इन दिनों इंटरनेट, मोबाइल फोन और कंप्यूटर का इस्तेमाल बहुत आम हो गया है। छात्र इन तकनीकों को अध्ययन के लिए एक अच्छा विकल्प मानते हैं लेकिन ये तकनीकें किताबों के महत्व को कभी खत्म नहीं कर सकतीं। जब हम किताबें पढ़ते हैं तो हमें कई नई जानकारियां मिलती हैं लेकिन कई अनसुलझी बातें भी होती हैं। इन सवालों का जवाब पाने के लिए हमें और अध्ययन करना होगा। इससे छात्रों में पढ़ने और खोजने की क्षमता बढ़ती है। यह हमारे दिमाग का एक अच्छा व्यायाम है और हमारे दिमाग को तेज करने का सबसे अच्छा तरीका भी।

अगर हम इंटरनेट की बात करें तो यह हमें इस प्रकार का लाभ नहीं देता है क्योंकि वहां पर सारी जानकारी पहले से ही उपलब्ध होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह हमारी प्रभावकारिता और क्षमता को क्षरित करता है। प्रौद्योगिकी को भी विद्युत शक्ति के उपयोग की आवश्यकता होती है लेकिन किताबों के साथ ऐसा नहीं है। किताबों को सिर्फ खोलने और पढ़ने

की आवश्यकता होती है। वे हमारे लिए किसी भी समय उपलब्ध हैं, लेकिन इंटरनेट को संचालित करने के लिए डेटा और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इंटरनेट सीखने का एक अच्छा माध्यम है लेकिन किताबों को पढ़ने पर इसे कभी भी तरजीह नहीं दी जा सकती है।

छात्र जीवन, संघर्ष की एक अनूठी दास्तान होती है और इस के दौरान संघर्ष की सच्ची साथी होती हैं किताबें। हर छात्र को निश्चित रूप से किताबें पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। किताबें सिर्फ प्रतियोगी जीवन की ही साथी नहीं हैं बल्कि यह जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर हमारा मार्गदर्शन करती हैं। चूंकि छात्र जीवन का विकासशील चरण होता है, उन्हें अपने माता-पिता, शिक्षकों और बड़ों द्वारा अच्छी तरह से निर्देशित करने की भी आवश्यकता होती है। इसके साथ किताबें जीवन में निर्णय लेने की कला सिखाती हैं। आखिरकार हमारा जीवन हमारे निर्णयों का ही तो परिणाम होता है। इसलिए किताबें हमारी सहयात्री हैं।

विद्यार्थियों को निर्देशित करने का सबसे अच्छा तरीका है किताबों से दोस्ती करने की सलाह देना। कुछ महान व्यक्तियों की आत्मकथाओं वाली कई पुस्तकें हैं। ये किताबें छात्रों को उन लोगों के जीवन से प्रेरित होने में मदद कर सकती हैं जिनसे वे अपने जीवन में प्रभावित रहते हैं। नैतिकता और मूल्यों से संबंधित अच्छी किताबें पढ़ना विद्यार्थियों को अच्छे गुणों से समृद्ध करता है और इस प्रकार वे बड़े होकर समाज के अच्छे और जिम्मेदार नागरिक बनते हैं।

जब हम एक पुस्तक पढ़ते हैं तो एक पूरी नई दुनिया हमारे सामने होती है और हम अपने आप को लेखक के स्थान पर रखने की कोशिश करते हैं और अपने दृष्टिकोण से चीजों का अनुभव करने की कोशिश करते हैं। अच्छी किताबें पढ़ने की आदत में शामिल होने से निश्चित रूप से हमारे मन को लचीला और तंदरुस्त रखने में मदद मिलती है। जिस प्रकार अच्छा और पौष्टिक भोजन हमारे शरीर को सेहतमंद और स्वस्थ रखता है उसी तरह किताबें हमारे विचारों को पोषित रखने में हमारी मदद करती हैं। इसलिए यदि आपने कभी किताबें नहीं पढ़ी हैं तो अब इस आदत को डालें और एक अच्छे बदलाव का अनुभव करें।

अंत में हम कह सकते हैं कि मानव के व्यक्तित्व के विकास के लिए अध्ययन से श्रेष्ठ विकल्प कोई नहीं है।

भारत : प्राचीन काल से ही विश्व गुरु



श्री रवि शंकर प्रभाकर,
स.लेप.अ.

प्राचीन भारत की वैज्ञानिक जानकारीयों को जानकार हमें अत्यन्त गर्व होता है कि वर्षों पहले कई प्रकार की खोज हमारे प्राचीन वैज्ञानिकों, ऋषि मुनियों द्वारा हुई थी। उस अवधि के दौरान प्राचीन भारतीयों ने विज्ञान और गणित के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया था। चिकित्सा की देसी प्रणाली आयुर्वेद थी जो प्राचीन काल में विकसित हुई थी। यहाँ तक कि योग को आयुर्वेद के संबद्ध विज्ञान के रूप में विकसित किया गया था। उन्होंने पश्चिम के वैज्ञानिकों से बहुत पहले ही गणित, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, योग इत्यादि क्षेत्रों में बहुत ही उच्च कोटि का आविष्कार कर दिया था। परन्तु उनके योगदान का कम प्रचार-प्रसार के कारण उतनी प्रसिद्धि नहीं मिल पाई, जितनी मिलनी चाहिए थी। आज हम भारत के कुछ ऐसे महान विभूतियों के बारे में बात करने जा रहे हैं जिन्होंने पूरे विश्व को कई बड़े सिद्धांत और ज्ञान देकर मानव विकास के क्रम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा भारत को विश्व गुरु बनाया था।

1.महर्षि अगस्त्य : रामायण और महाभारत में संत अगस्त्य मुनि का उल्लेख मिलता है। वे प्रसिद्ध सप्त ऋषियों में से एक और प्रसिद्ध 18 सिद्धों में से भी एक हैं। ऋषि अगस्त्य ने 'अगस्त्य संहिता' नामक ग्रंथ की रचना की। आश्चर्यजनक रूप से इस ग्रंथ में विद्युत उत्पादन से संबंधित सूत्र मिलते हैं जिसमें लिखा गया है - एक मिट्टी का पात्र लें, उसमें ताम्र पट्टिका डालें तथा शिखिग्रीवा डालें, फिर बीच में गीली काष्ठ पांसु लगाएं, ऊपर पारा तथा दस्त लोष्ट डालें, फिर तारों को मिलाएंगे तो उससे मित्रावरुणशक्ति (बिजली) का उदय होगा। अगस्त्य संहिता में विद्युत का उपयोग इलेक्ट्रोप्लेटिंग के लिए करने का भी विवरण मिलता है। उन्होंने बैटरी द्वारा तांबा या सोना या चांदी पर पॉलिश चढ़ाने की विधि निकाली, अतः अगस्त्य को कुंभोद्भव भी कहते हैं।

महर्षि अगस्त्य केरल के मार्शल आर्ट कलरीपायट्टु की दक्षिणी शैली वर्मक्कलै के संस्थापक आचार्य एवं आदि गुरु हैं। वर्मक्कलै निःशस्त्र युद्ध कला शैली है। महर्षि अगस्त्य ने यह कला अन्य सिद्धियों को सिखायी तथा तमिल में इस पर पुस्तकें भी लिखीं। महर्षि अगस्त्य दक्षिणी चिकित्सा पद्धति 'सिद्ध वैद्यम्' के भी जनक हैं।

2. महर्षि बोधायन : आज से 2600 वर्ष पूर्व महर्षि बोधायन भारत के बिहार राज्य के सीतामढी में उत्पन्न हुए। इनके विषय में कई प्रकार की किंवदंतियाँ हैं जिसके कारण सदियों से मिथिला के लोग इस महान गणितज्ञ की पूजा ईश्वर रूप में करते आ रहे हैं। महर्षि बोधायन ने बोधायन धर्मसूत्र, बोधायन स्मृति, बोधायन गृह्यसूत्र, बोधायन पितृमेध सूत्र, धर्मशास्त्रम और ब्रह्मसूत्र पर वृत्ति ग्रंथ आदि 200 से अधिक ग्रंथों की रचना की थी। साथ ही उन्होंने शुल्बसूत्र के माध्यम से गणित के कई महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए। वे एक महान गणितज्ञ थे। उन्होंने प्रमेय, रेखागणित, ज्यामिति एवं त्रिकोणमिति पर अनेक सिद्धांत दिए। एक श्लोक द्वारा बताया गया है कि आयत में कर्ण का वर्ग आधार तथा लंब के वर्गों के योग से बराबर होता है। विद्वानों का मानना है कि बोधायन के प्रमेय सिद्धांतों को ही यूनानी गणितज्ञ पाइथागोरस ने विस्तार दिया था। बाद में इसी के आधार पर आर्यभट्ट ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में खोज की।

3. कणाद ऋषि : महर्षि कणाद का जन्म वर्तमान में गुजरात के द्वारका के पास 600 ईसा पूर्व हुआ था। वे एक महान वैज्ञानिक एवं दार्शनिक थे। उन्होंने वैशेषिक दर्शनशास्त्र की रचना की जो परम सत्य और प्रकृति के सिद्धांतों और उनके कारणों की विवेचना करता है। संसार पर सबसे न्यूनतम कण परमाणु का सिद्धांत इन्हीं ने सबसे पहले दिया था। इस कारण इसे कणाद का परमाणु सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। माना जाता है कि परमाणु तत्व का सूक्ष्म विचार सर्वप्रथम इन्होंने किया था इसलिए इन्हीं के नाम पर परमाणु का एक नाम कण पड़ा। महर्षि कणाद कहना था कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, दिक्, काल, मन और आत्मा इन्हें जानना चाहिए। इस परिधि में जड़-चेतन सारी प्रकृति व जीव आ जाते हैं। महर्षि कणाद ने परमाणु को ही समझाने में अपना जीवन दिया, इसे ही सृष्टि का मूल तत्व माना।

4. ऋषि चरक: ऋषि चरक के बारे में कहा जाता है ये पहली सदी के विद्वान थे तथा कुषाण शासक कनिष्क के राज वैद्य थे। कुछ इतिहासकारों ने इनका कालक्रम बौद्ध काल से पूर्व का माना है। आचार्य चरक एक बड़े ज्ञानी ऋषि और आयुर्वेद विद्या के जानकार थे। इन्होंने प्रसिद्ध

ग्रंथ चरक संहिता की रचना की। यह आज के समय में भी आयुर्वेद पद्धति द्वारा रोगों के निदान में बड़ा उपयोगी ग्रंथ है। करीब 2200 वर्ष पूर्व इन्होंने भारतीय औषधि विज्ञान को विकास क्रम प्रदान किया था। चरक ऐसे पहले चिकित्सक थे जिन्होंने पाचन, चयापचय (भोजन - पाचन से सम्बंधित प्रक्रिया) और शरीर प्रतिरक्षा की अवधारणा दी थी। उनके अनुसार शरीर में पित्त, कफ और वायु के कारण दोष उत्पन्न हो जाते हैं। यह दोष तब उत्पन्न होते हैं जब रक्त, मांस और मज्जा खाए हुए भोजन पर प्रतिक्रिया करती है।

5.महर्षि सुश्रुत : भारत के इस महान सर्जन सुश्रुत का जन्म प्राचीनकाल में करीब 800 ईसा वर्ष पूर्व माना जाता है। कहा जाता है की सुश्रुत को आयुर्वेदिक चिकित्साशास्त्र के साथ-साथ शल्य चिकित्सा का ज्ञान भी था। इन्हें शल्य चिकित्सा का पितामह भी कहा जाता है। उन्होंने अपने ज्ञान को अपने प्रामाणिक ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' में लिपिबद्ध किया। 'सुश्रुत संहिता' महान प्राचीन सर्जन सुश्रुत के अनुभवों का सार है। इन्होंने शल्य चिकित्सक बनने से पहले अनेक जानवरों पर अपना शल्य क्रिया का परीक्षण किया था। सुश्रुत अपने अवधि के महान शरीर संरचना विज्ञानी, बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग व नेत्ररोग विशेषज्ञ माने जाते हैं। आज से कई हजार वर्ष पहले प्राचीन भारत में शल्य चिकित्सा प्रचलित थी। डिलिवरी, मोतियाबिंद, कृत्रिम अंग लगाना, पथरी का इलाज और त्वचा सर्जरी जैसी कई तरह की मुश्किल सर्जरी को पूरा किया था।

6.आर्यभट्ट : आर्यभट्ट का जन्म 476 ईस्वी को पाटलिपुत्र में हुआ था। उन्होंने आर्यभटीय किताब की रचना की थी जिसमें उन्होंने बताया है कि वे पाटलिपुत्र के निवासी हैं। आर्यभट्ट ने अपनी शिक्षा मगध साम्राज्य के प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। यहीं से ज्ञान प्राप्त कर आर्यभट्ट प्रख्यात गणितज्ञ, खगोलशास्त्री और ज्योतिषशास्त्री बने। आर्यभट्ट गुप्त साम्राज्य के राजा चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में रहते थे। आर्यभट्ट प्रथम खगोलशास्त्री थे जिन्होंने विश्व को पृथ्वी के गोल होने की जानकारी दी। उन्होंने बताया था कि पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने के कारण ही दिन और रात होते हैं। आर्यभट्ट ने विश्व को बताया था की धरती अपनी धुरी पर एक चक्कर पूरा करने में लगभग 24 घंटे का समय लगाती है। पहले यह माना जाता था की ग्रह और तारे गतिशील हैं और पृथ्वी अपनी जगह पर स्थिर है। आर्यभट्ट ने धरती की घूर्णन गति की अवधि की सटीक जानकारी प्रदान की। उन्होंने तारेगना (वर्तमान पटना के पास) में वेधशाला भी स्थापित की जिससे वह ग्रहों व खगोलीय नक्षत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करते

थे। आर्यभट्ट ने बताया की चंद्रमा का रंग असल में काला है। चंद्रमा का अपना प्रकाश नहीं होता है। बल्कि वह सूर्य के प्रकाश के प्राबर्तन के कारण ही चमकीला दिखाई पड़ता है। उन्हें सूर्य और चन्द्र ग्रहण के बारे में भी जानकारी थी। उन्होंने सूर्य और चन्द्र ग्रहण के बारे में फैली गलत धारणा पर पर्दा उठाया। उन्होंने बताया की ग्रहण पृथ्वी, चन्द्रमा और सूर्य को एक ही सीधी (रेखा) लाइन में होने के कारण लगते हैं।

आर्यभट्ट केवल एक खगोलशास्त्री ही नहीं बल्कि महान गणितज्ञ भी थे। महान खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने ज्योतिष, गणित और खगोल विज्ञान से संबंधित अनेक रचनायें की। आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्टिया' नामक ग्रन्थ की रचना की। आर्यभट्टिया में उन्होंने गणित के साथ-साथ ज्योतिष विज्ञान के कई पहलुओं के बारे में जिक्र किया है। आर्यभट्टिया नामक ग्रंथ के बाद इन्होंने एक अन्य ग्रन्थ 'आर्यभट्ट सिद्धांत' की रचना की। इस ग्रंथ में ज्योतिष विज्ञान की गणनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया। इनकी इस पुस्तक में कई खगोलीय उपकरण का भी वर्णन मिलता है। इस उपकरण में शंकु यंत्र, छाया यंत्र, कोण मापी उपकरण आदि का वर्णन मिलता है। इस पुस्तक में आर्यभट्ट द्वारा दिये गए आँकड़े का आज भी देश में पंचांग तैयार करने में मदद लिया जाता है। आर्यभट्ट ने सर्वप्रथम दुनियाँ को शून्य (0) का ज्ञान दिया। शून्य के आविष्कार के फलस्वरूप गणितीय गणना में आसानी हुई। इस महान् खगोलशास्त्री के सम्मान में भारत सरकार ने अपना पहला उपग्रह का नाम 'आर्यभट्ट उपग्रह' रखा था जिसे सन 1975 में छोड़ा गया था।



चल उठ,खड़ा हो जाग रे !



श्री शेखर कौशिक
स.ले.प.अ.

चल उठ खड़ा हो जाग रे,जीवन के युद्ध से ना भाग रे ।
जय को आदत बना,संघर्ष को इबादत बना,
कर हर कठिन राह को पार रे,दे इस सफ़र को नया नाम रे,
चल उठ खड़ा हो जाग रे,जीवन के युद्ध से ना भाग रे ।
सुख की आहुति दे,चरित्र का निर्माण कर,
आत्मा को ताप दे,है कठिन पर ये काम कर ।
निश्चित ही तू पाएगा एक दिन जयगान रे,
चल उठ खड़ा हो जाग रे,जीवन के युद्ध से ना भाग रे ॥
साहस जुटा, तरकश उठा अब लक्ष्य को तू साध ले,
या चढ़ वक्त के अश्व पर,मंज़िल की ओर भाग ले ।
हवाओं से तू बात कर, दे जीत की दहाड़ रे,
चल उठ खड़ा हो जाग रे,जीवन के युद्ध से ना भाग रे ॥
सम्मानित बन,अस्तित्व बचा,जीत का सेहरा सजा,
इतिहास में दे पन्ना जोड़,जो थे मिथक तू दे अब तोड़ ।
जीत का नया अध्याय लिख,दे उसे अपना नाम रे,
चल उठ खड़ा हो जाग रे,इस युद्ध से मत भाग रे ॥

आज की युवा पीढ़ी



दीप्ती दीक्षित
कनिष्ठ अनुवादक

आज की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति से दूर हो रही है,
पश्चिमी सभ्यता को अपनाकर अपनों से दूर हो रही है।
रोज नए-नए डे मनाकर अपने को खुश दिखा रही है,
परन्तु अंदर से पूछने पर केवल कमजोर नजर आ रही है।
दिन-भर मोबाइल में वाट्सएप चलाकर अपने को व्यस्त दिखा रही है,
अपनों के पूछने पर हालचाल अपनों को केवल मैसेज भेज रही है।
फेसबुक, इंस्टा पर दोस्त बनाकर अपने दोस्तों को छोड़ रही है,
आधुनिकता की इस दौड़ में आधुनिक बनने की कोशिश कर रही है,
नहीं पता उसको इस दौड़ में वह अपना क्या-क्या खो रही है।
पूछने पर किसी से भी आज की पीढ़ी डॉक्टर, इंजीनियर बनना चाह रही है,
डॉक्टर, इंजीनियर बन जाने पर अपने देश को छोड़कर जा रही है।
विदेश में पहुँचने पर वहाँ की सभ्यता को अपना रही है,
अपनों को अपने देश में छोड़कर अपनी सभ्यता को भुला रही है।
नहीं पता उनको वह अपनों और अपनी संस्कृति को भुलाकर यह क्या कर रही है।
आओ हम सब मिलकर इस पीढ़ी को जागरूक करें,
अपनों और अपनी संस्कृति को अपनाकर आगे बढ़ें।
युवा पीढ़ी की कर्मठता एवं सजगता ही देश को आगे बढ़ाएगी,
इसी धारणा के साथ ही इस पीढ़ी की प्रगति हो पाएगी।

छत्रपति शिवाजी



श्री सुरेन्द्र सिंह,
व. लेप.

शिवाजी का बचपन

छत्रपति शिवाजी जिनका पूरा नाम छत्रपति शिवाजीराजे भोसले था, यह एक महान भारतीय योद्धा थे। जिन्होंने भारत में 1674 ई. में पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की स्थापना की। इनका जन्म 19 फरवरी 1630 महाराष्ट्र शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। शिवाजी महाराज अपनी वीरता, कौशल, और न्याय प्रियता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने स्वराज्य की स्थापना के लिए मुगल साम्राज्य और बीजापुर की सुल्तनत के खिलाफ लड़ाई लड़ी। आधुनिक गोरिल्ला युद्ध पद्धति का जनक भी शिवाजी महाराज को माना जाता है। कम संसाधनों के बावजूद कैसे युद्ध लड़े और जीते जाते हैं, शिवाजी महाराज ने सिद्ध किया है। वह सनातन गौरव के प्रतीक हैं और उनकी विरासत भारत में कई लोगों को प्रेरित करती है। इनके पिता का नाम शहाजीराजे था, जो बीजापुर के सुल्तान के दरबार में एक सेनापति हुआ करते थे तथा माँ का नाम जिजाबाई था, जो एक धर्मनिष्ठ हिंदू थीं। जीजामाता ने उन्हें बचपन से ही महान सनातन संस्कृति की रक्षा और उत्थान और गौरव को बहाल करने के लिए "हिंदवी स्वराज्य" की स्थापना करने की स्पष्ट समझ और दिशा के साथ बड़ा किया। उनका पालन-पोषण रामायण और

महाभारत ग्रंथों की शिक्षा के साथ हुआ था। कहा जाता है कि छत्रपति शिवाजी का नाम शिवाजी, स्थानीय देवी शिवई के नाम पर उनका नाम शिवाजी रखा गया। उनका बाल्यकाल दादा कोंडदेव की देखरेख में हुआ। शिवाजी जब 12 वर्ष के थे तब उन्हें पिता की जागीर पूना प्राप्त हुई। जीजाबाई की देखरेख में शिवाजी को तलवारबाजी तथा अनेक कौशलताएँ सिखने को मिली।

शिवाजी का शुरूआती बचपन शिवनेरी में बीता, जहाँपर उन्होंने अपनी माँ और स्थानीय धार्मिक गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की। वही उन्होंने साथ ही तलवारबाजी, तीरंदाजी और घुड़सवारी के साथ-साथ हिंदू धर्म और मराठी/ सनातन संस्कृति का भी ज्ञान प्राप्त किया। एक योद्धा के रूप में उन्होंने वह सारी कलाएँ सीख ली, समर्थ गुरु रामदास की शिक्षाओं से प्रेरित होकर शिवाजी ने स्वराज्य की एकता को प्रोत्साहित किया और 'सनातन धर्म' का प्रचार किया। जिसका अर्थ था जातिगत भेदभाव से मुक्त एक ऐसे उदार धर्म को प्रोत्साहन, जिसमें महिलाओं को प्रतिष्ठा और अधिकार देना जिसके बाद उन्हें एक योद्धा के रूप में देखा गया।

स्वाभिमानी शिवा

उस समय बीजापुर का सुल्तान मोहम्मद आदिलशाह था। वह एक निर्दयी तथा क्रूर शासक था जिसने अपने राज्य में अन्याय फैला रखा था। सैनिकों तथा राजकुमारों का बहुत ही क्रूर व्यवहार शिवाजी को पसंद नहीं आया। एक बार शिवाजी अपने पिता शाहब जी के साथ बीजापुर गए हुए थे। वहाँ पर बाजार में उन्होंने देखा कि एक कसाई गाय को पीटता हुआ उसे बूचड़खाने में काटने के लिए ले जा रहा है। शिवाजी से ऐसा करुण दृश्य देखा नहीं गया उन्होंने अपनी तलवार से रस्सी को काटकर गाय को मुक्त कर दिया।

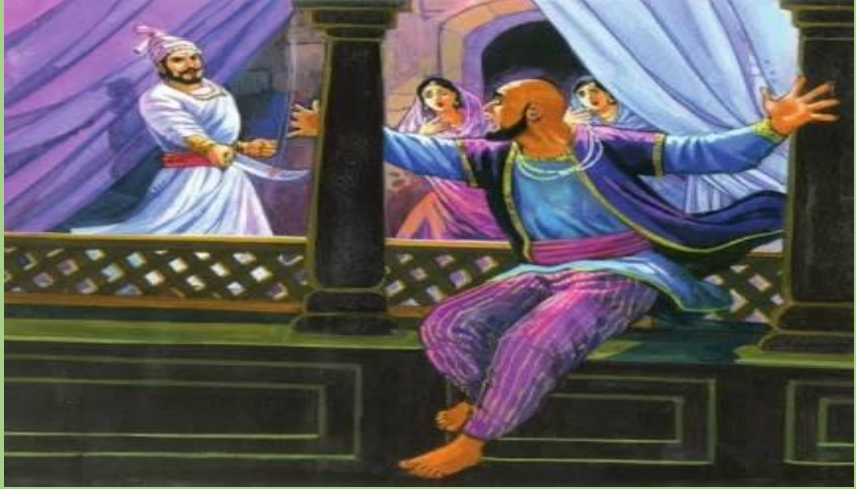
जब शिवाजी अपने पिता शाह जी के साथ दरबार में पेश हुए तब उन्होंने आदिलशाह के सामने सर झुकने से मना कर दिया। उनके पिता ने उन्हें समझाया कि बेटा वह सुल्तान है और उनके सामने सर झुकाना हम सबका कर्तव्य है। तो शिवाजी ने अपने पिता से कहा कि यह सिर या तो आपके सामने झुक सकता है या फिर मां साहिब के सामने या फिर माँ भवानी के सामने।

शिवाजी की सर्जिकल स्ट्राइक

औरंगजेब पहले से ही शिवाजी के अदम्य साहस के कारनामे सुन-सुनकर अत्यंत त्रस्त था। उसने अपने मामा शाइस्ता ख़ान को एक लाख की विशाल सेना लेकर शिवाजी पर आक्रमण करने का आदेश दिया, शाइस्ता ख़ान रास्ते भर मंदिरों को तोड़ता, गांवों को रौंदता, कत्लेआम मचाता हुआ मई 1660 में पुणे स्थित शिवाजी के लाल महल में आ धमका और अपना डेरा डाला, लाल महल के आसपास खान के सरदारों ने डेरे जमाये, पुणे के जिस लालमहल में शिवाजी ने पूरा बचपन व किशोर अवस्था बितायी थी, वहां आज शाइस्ता खान और उसके सरदारों के लिए गोमांस व नशेबाजों का दस्तरखान बिछा हुआ था। शाइस्ता ख़ान ने चारों तरफ सख्त पहरा भी बिठा रखा था, ताकि मराठे किसी भी तरफ से लालमहल या सेना-शिविरों में न घुस पायें। शिवाजी के अधीन राजगढ़ दुर्ग में कुल सेना पंद्रह हजार से अधिक नहीं थी।

इसी कारण से शिवाजी की ओर से कहीं कोई प्रत्यक्ष हलचल नहीं की थी, मुगलों के शासन की नींव शाइस्ता ख़ान को कैसे भगाया जाए, इस विषय में परामर्श करने के लिए शिवाजी ने

रायगढ़ में मंत्रणा की और बंदूक-तोपों से सुसज्जित 1 लाख से अधिक सेना से घिरे पुणे के लालमहल में गुपचुप प्रवेश कर शत्रु को खत्म करने के लिए एक अत्यंत दुस्साहसिक योजना तैयार की, योजना



क्रियान्वयन के लिए को चुना गया। शिवाजी महाराज की गुप्तचर-व्यवस्था अत्यंत दक्ष थी, इसका मुख्य दायित्व कुशल-बुद्धि बहिर्जी नाइक पर था, उन्हीं की सूचनाओं के आधार पर शिवाजी ने ऐसी साहसपूर्ण योजना बनाई थी। अभियान के लिए इस दिन को चुनने का एक मुख्य कारण यह भी था कि, वह महीना रमजान का था और दिन भर रोजा रखने के बाद मुगल सेना सूर्य अस्त होने के बाद स्वाभाविक रूप से भर पेट भोजन खा-पीकर गहरी नींद में सो जाती थी! सिर्फ पहरेदार जागते थे।

महाराज ने उसी समय मोरोपंत पिंगले व नेताजी पालकर को अभियान के शुभारंभ का आदेश दिया। तुरत-फुरत अभियान की तैयारियां शुरू हो गईं! सबसे पहले 2,000 वीर मराठा सैनिक पद्मावती पहाड़ के नीचे आकर खड़े हो गये, माता जीजाबाई को प्रणाम कर चुने हुए 400 वीर सैनिकों को साथ लिया तथा बाकी सेना को दो टुकड़ियों में बांट दिया जिसका नेतृत्व दो प्रधान सेनापतियों ने संभाला! राजे अपने मराठे वीरों को लेकर सहज भाव से लालमहल की ओर बढ़ चले! इस गुट ने बारातियों का स्वांग रचा था! वह विवाह की शोभायात्रा लेकर अंदर पहुंचा! शाम के बाद घोड़े पर सवार होकर सुनहरे रंग का शाल व फूल-माला के सेहरे से मुंह ढका जवान 'वर' और उसके पीछे बाजे-गाजे के साथ बराती! सभी ठाट-बाट से हंसी-मजाक करते विवाह की शोभायात्रा का अभिनय करते हुए शहर में घुसे!

शिविर के पास पहुंचते ही पहरेदारों ने उन्हें पूछा, "तुम लोग कौन हो? कहां से आए हो? कहां जा रहे हो?" चिमनाजी ने उनको जवाब दिया, "हम मुगल शिविर के ही लोग हैं! रात को छावनी के बाहर गश्त लगाना हमारे जिम्मे है! काम खत्म कर लौट रहे हैं! तुम लोगों का रोजा तो खत्म हो गया है, लेकिन हम लोग बहुत थके हुए हैं! अब खेमे में जाकर, खा-पीकर सो जाएंगे!" बात ऐसे सीधे-सादे ढंग से कही इस बात पर पहरेदारों ने सहज ही विश्वास कर लिया! दरअसल इतने विशाल शिविर में किसे, किस काम से भेजा गया है, इसका ठीक-ठीक पता करना इन पहरेदारों के लिए भी मुश्किल था। राजे की सेना के बहुत से लोग मुगल शिविर के घोड़ों, हाथियों तथा अन्य मवेशियों के लिए घास लाने वाले घसियारे बनकर पुणे शहर में घुसे थे। लालमहल के रसोईघर से आगे जनानखाने के भीतर जाने का एक दरवाजा था उसे तोड़कर घुसते समय आवाज होना स्वाभाविक था, दरवाजा टूटते ही पहले चिमनाजी और उनके पीछे महाराज सेना सहित शाइस्ता ख़ाँ के महल में घुस गए और चारों तरफ जितने भी पहरेदार थे, उन्हें खत्म कर दिया, हाहाकार मच गया, शाइस्ता ख़ाँ कोने में एक भारी पर्दे की ओट में छिपा दिया, महाराज खान को ही ढूंढ रहे थे! उन्होंने अपनी तलवार से भारी पर्दे को चीरा! पर्दा चीरते ही शाइस्ता ख़ाँ मिल गया! शिवाजी ने अंधेरे में अंदाज से उस पर तलवार चला दी, भीषण चीख सुनकर महाराज को लगा कि शाइस्ता ख़ाँ मर गया लेकिन वह मरा नहीं था, उसके दाहिने हाथ की अंगुलियां कटकर जमीन पर गिर पड़ी थीं, खून बहता हाथ लेकर वह जनानखाने की खिड़की से कूद कर बेगमों के कमरे में जा कर छिप गया।

इतने कोहराम से लालमहल के बाहर काफी संख्या में मुगल सिपाही इकट्ठे हो गए थे! दुश्मन ने हमला किया है, यह खबर फैलते ही “कहां है दुश्मन? किधर गया?” की चिल्लाहट मच गई, मुगलों की चिल्लाहट में शामिल होकर शिवाजी अपनी सेना के साथ अंधेरे का लाभ उठाते हुए लालमहल के बाहर निकल गये, काफी देर के बाद मुगल सेना को समझ में आया कि शिवाजी अपनी सेना के साथ मुगल शिविर से बाहर चले गये! मुगल सेना की एक टुकड़ी मराठों को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ी, बहुत दूर से मशालें लिए मराठा सेना को भागते देखकर मुगल सेना शिवाजी को पकड़ने उसी दिशा में दौड़ पड़ी! लेकिन मुगलों ने वहां पहुंचकर देखा कि अनेक बैलों के सींगों पर मशालें बांध दी गई थीं और वे बैल ही डर के मारे इधर-उधर भाग रहे थे, और उसी बीच शिवाजी महाराज भी अपनी सेना के साथ सिंहगढ़ पहुंच गए।

यह थी भारत के इतिहास की पहली सर्जिकल स्ट्राइक और इसकी योजना बनाने और कार्यान्वित करने वाले उस प्रतापी राजा की उम्र उस समय मात्र 33 साल थी। एक लाख से भी अधिक संख्या वाली विशाल मुगल सेना के शिविर में गिनती भर मराठा सैनिक लेकर खुद शाइस्ता खाँ पर आक्रमण करने जैसा अपूर्व शौर्य दिखाकर शिवाजी महाराज ने शाइस्ता खाँ के बहादुरी के घमंड को चकनाचूर कर डाला, शाइस्ता खाँ की तीन अंगुलियां कट गईं! उसका पुत्र फते खान, एक दामाद, एक सेनापति और चालीस महत्वपूर्ण पदाधिकारी मारे गए, शिवाजी राजे के न चाहते हुए भी अंधेरे में तलवार चलाने के कारण उसकी दो बगमें भी मारी गईं! राजे के कुल छः सैनिक मारे गए और चालीस घायल हुए, अंगुली-विहीन शाइस्ता खाँ की हालत पूँछ-विहीन सियार के समान अत्यंत शर्मनाक हो गई! औरंगजेब क्या, अपने सरदारों व सेनाओं को मुंह दिखाना भी उसके लिए कठिन हो गया! उसने सोचा, शिवाजी के हाथों मिली इस पराजय का कलंक जीवनभर साथ लेकर चलना होगा, उसने तीसरे दिन ही विशाल शिविर उठा लिया और अत्यंत अपमानित होकर पुणे छोड़कर वापस लौट गया।

क्रूर अफजल खान का वध

आदिल शाह बीजापुर का सुलतान था। उस समय छत्रपति शिवाजी महाराज ने बीजापुर के

सर्वाधिक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। आदिल शाह समझ गया कि यदि छत्रपति शिवाजी महाराज को समाप्त नहीं किया गया तो वह खतरनाक हो सकता है। इससे पहले भी उसने शिवाजी महाराज को मारने की कई बार कोशिश की थी, लेकिन वह इसमें सफल नहीं हुआ। अंत में उसने छत्रपति महाराज को मारने के लिए अफजल खान को भेजा। वह दिन था 10 नवंबर 1659, बता दें कि अफजल खान एक अच्छा रणनीतिकार था। उसने पहले छत्रपति शिवाजी महाराज के बड़े भाई संभाजी राजे को मार डाला था। अफजल खान ने छत्रपति शिवाजी महाराज से मिलने का संदेश भेजा। छत्रपति शिवाजी महाराज उनके घातक स्वभाव से वाकिफ थे। नियमानुसार शामियाने में किसी के पास कोई हथियार नहीं होगा और शामियाने के बाहर इंतजार करने के लिए दोनों पक्षों के 10 अंगरक्षकों में से एक अंगरक्षक होगा। अफजल खान जल्द ही शामियाने पर पहुंच गया, शामियाना बहुत बड़ा था। दोनों ने निहत्थे मिलने का निर्णय लिया। हालांकि, अफजल खान ने खंजर को अपने कोट के अंदर छिपा रखा था। छत्रपति शिवाजी महाराज को अंदाजा हो गया था कि अफजल खान कोई साजिश के तहत घात लगाकर हमला करेगा। इसलिए उन्होंने भी अपने कुर्ते के नीचे कवच पहन रखा था और अपनी मुट्ठी में बाघनख छुपा रखा था जो आसानी से दिखाई नहीं देता था। ऐसे में छत्रपति शिवाजी राजे बिना किसी डर के अफजल खान के खेमे में पहुंच गए। शिवाजी को देखकर, अफजल खान ने उसे गले लगाने के लिए अपने हाथ फैलाए और कहा, "आओ शिवबाबा, हमारे आलिंगन में आओ"। अफजल खान ने उन्हें अपनी बाहों में लेने की कोशिश की और फिर छिपे हुए खंजर से छत्रपति शिवाजी महाराज की पीठ पर वार किया और फिर उन्हें अपनी फौलादी भुजाओं में जकड़ कर मारने की कोशिश की। वहीं छत्रपति शिवाजी महाराज पहले से ही सावधान थे, ऐसे में जैसे ही अफजल खान ने वार किया तब छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी बाघनख से उसके पेट को चीर डाला और उसकी अंतड़ियां निकाल कर उसे मार डाला। इस तरह शिवाजी महाराज ने अपनी चतुराई और अदम्य साहस से अफजल खान का वध कर दिया। अफजल खान चिल्लाया "दगा दगा" उसकी आवाज सुनकर बाहर खड़ा सैय्यद बन्दा अंदर आया। अफजल खान को मरा हुआ देखकर उसने छत्रपति शिवाजी पर तलवार से हमला करने की कोशिश की लेकिन तभी पहले से सजग अंगरक्षक जीवा ने सैय्यद का तलवार वाला हाथ, अपनी तलवार से एक ही झटके में अलग कर दिया। झाड़ी में छिपे हुए सभी मवालों ने अफजल खान की सेना पर हमला कर उन्हें खदेड़ दिया। इस युद्ध को इतिहास में प्रतापगढ़ युद्ध के नाम से जाना जाता है।

शिवाजी महाराज को नजरबंद



यह बात साल 1666 की है, जब शिवाजी को मुगल शासक औरंगजेब का एक पत्र मिला, जिसमें उन्हें आगरा के शाही दरबार में आने के लिए आमंत्रित किया गया. उस दौरान शिवाजी को बादशाह के इरादों के बारे में पता था, लेकिन उन्होंने निमंत्रण स्वीकार कर

लिया, क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि किसी को यह लगे कि शिवाजी औरंगजेब से डरते हैं। इसके बाद शिवाजी अपने बड़े बेटे शंभुजी और सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी के साथ औरंगजेब के जन्मदिन के मौके पर आगरा पहुंचे। जैसे ही शिवाजी ने दरबार में प्रवेश किया, उन्होंने अपनी भेंट औरंगजेब के सामने रखी इस दौरान औरंगजेब ने शिवाजी का अच्छे से स्वागत नहीं किया और इस वक्त शिवाजी को बता दिया गया था कि उनको और उनके पुत्र को बंदी बना। वे कई महीनों तक औरंगजेब की कैद में रहे, लेकिन शिवाजी परेशान नहीं हुए बल्कि शांतचित होकर वहां से भागने की योजना बनाते रहे।

शिवाजी को एक बड़े महल में कैद किया गया था और उसमें कई सेवक भी थे इसके अलावा करीब 1000 सैनिकों का हमेशा उनपर पहरा बना रहता था लेकिन, शिवाजी ने अपने भागने का धीरे-धीरे जाल बिछाना शुरू कर दिया था और कई निचले कर्मचारियों से जानकारी एकत्र की और उनसे मित्रता कर ली, कहा जाता है कि 19 अगस्त 1666 को शिवाजी ने सैनिकों को कहा कि वो बीमार हैं, इसलिए गरीबों में फल-मिठाई आदि बटवाना चाहते हैं। इसके बाद उन्होंने मजदूरों के साथ मिलकर बाहर निकलने की योजना बनाई, इसलिए कुछ इतिहासकारों का दावा है कि उन्होंने एक मजदूर का वेश अपनाया और अपने बेटे संभाजी को फलों की टोकरी में बैठाया। इसके बाद एक मजदूर के रूप में वहां से निकलने में सफल हो गए। इसके बाद वो आगरा से कई किलोमीटर दूर चले गए, जहां नीरजी रावजी उनका इंतजार कर रहे थे। इस तरह शिवाजी औरंगजेब की कैद से भागने में सफल हुए। जब औरंगजेब को इसका पता चला तो उसने आगबबूला होकर अपना सर पीट लिया।

शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक

इसमें कोई संदेह नहीं कि शिवाजी महाराज एक साहसी और संकल्पित योद्धा थे, जिन्होंने 17वीं शताब्दी में 'हिंदवी स्वराज्य' के संस्थापक के रूप में ऐतिहासिक कार्य किया। 6 जून, 1674 को अपूर्व भव्यता के साथ, वह छत्रपति, 'सर्वोच्च संप्रभु' के रूप में सिंहासन पर बैठे। छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिससे इस संप्रभु और शक्तिशाली हिंदू साम्राज्य की नींव पड़ी। यह साम्राज्य गुप्त, मौर्य, चोल, अहोम और विजयनगर साम्राज्य की ही तरह शक्तिशाली, सुसंगठित और सुशासित था। छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350वें वर्ष की स्मृति को शिव शक पंचांग के अनुसार 'शिवराज्याभिषेक सोहला' के रूप में भी जाना जाता है।

शिवाजी महाराज की मृत्यु के संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है। 1680 में कुछ समय बीमार रहने के बाद पहाड़ी दुर्ग राजगढ़ में तीन अप्रैल को उनकी मृत्यु हो गई। कुछ का मानना है कि उनकी मृत्यु स्वाभाविक थी, लेकिन कई इतिहासकारों ने लिखा कि उन्हें साजिश के तहत जहर दिया गया था।



मेरे प्यारे दो भाई



श्रीमति पूजा

भाई भाई भाई भाई भाई
मेरे प्यारे दो दो भाई
लड़ते झगड़ते रूठे मानते पर दुनिया से अलग मेरे दो भाई
अपने से आगे रखते हर सुख दुख में साथ देते मेरे प्यारे दो भाई

बचपन हमने साथ बिताया
एक ही बर्तन में खाना खाया
हर त्यौहार साथ मनाया
हर मुसीबत में साथ निभाया
ऐसे हैं मेरे दो भाई

साथ हमेशा देते हैं जैसे हों मेरी परछाई
थोड़े खडूस थोड़े अकडू हैं
पर सबसे प्यारे हैं मेरे भाई
आज भी जाती हूं तो लाते हैं चॉकलेट
अजीब सा रिश्ता है यह हर छोटी-छोटी खुशियों को बड़ा बनाता है
ब करे आपस में ना हो कभी लड़ाई
हो रिश्ता हमारा जैसे स्वीट सी मिठाई ॥

चालीस की महिला



श्रीमति पूजा

चालीस पार की महिला की
अजब कहानी रह जाती है
पति और बच्चों में फंस कर रह जाती है
पहले जिसके आगे पीछे पति और बच्चे घूमें
उन्हें वह कुछ कह ना पाती है
मम्मी आपको पता नहीं
कह कर उस पर गुस्सा हो जाते हैं
पति को भी फुरसत नहीं
बच्चों की गोपनीयता भंग हो जाती है
फिर जिंदगी उसी धरे पर रुक जाती है
अपना मन मसोस कर
किसी को कुछ ना कह पाती है
सबको खुश रखने में
अपने आप को भूल जाती है
पति के कपड़े बच्चो का खाना
बस यही दिनचर्या रह जाती है
इस जिंदगी में दुख की थोड़ी सी
सलवटे हैं
तो सुख के कुछ फूल सुहाने हैं
क्यों सोचे आगे क्या होगा
अब क्या जाने आगे क्या ठिकाना है
उस ऊपर बैठे बाजीगर के खेल निराले हैं।

उत्तराखण्ड के पर्यटन स्थान



श्री नरेंद्र सिंह चौहान, व. लेप.

उत्तराखण्ड को देवभूमि के नाम से जाना जाता है यहाँ पर पौराणिक काल से कई स्थान हैं जो काफी प्रसिद्ध हैं। इनमें से उत्तराखण्ड में प्रयाग जिन्हें देवभूमि काफी प्रसिद्ध माना गया है। इनमें से विष्णु प्रयाग, नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, और देवप्रयाग उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध मुख्य नदियों का संगम है। नदियों का संगम भारत में बहुत ही पवित्र माना जाता है विशेषतः इसलिए कि नदियां देवी के रूप में मानी जाती हैं। प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम के बाद गढ़वाल-हिमालय क्षेत्र के संगम का सबसे पवित्र माना जाता है। क्योंकि गंगा, यमुना और उनकी सहायक नदियों का यही उद्गम स्थल है। जिन जगहों पर इनका संगम होता है उन्हें प्रमुख तीर्थ माना जाता है। यहीं श्राद्ध के संस्कार होते हैं।

1. **विष्णु प्रयाग:-** धौली गंगा तथा अलकनंदा के संगम पर विष्णुप्रयाग स्थित है। संगम पर भगवान विष्णु जी की प्रतिमा से संशोभित प्राचीन मंदिर और विष्णु कुण्ड दर्शनीय हैं। यह समुद्र तल से 1372 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। विष्णु प्रयाग जोशीमठ-बद्रीनाथ मोटर मार्ग पर स्थित है जोशीमठ से आगे मोटर मार्ग से 12 किमी. और पैदल 3 किमी. की दूरी पर विष्णुप्रयाग नामक संगम स्थान है। यहां पर अलकनंदा तथा विष्णु गंगा (धौली गंगा) का संगम है, स्कंध पुराण में तीर्थ का वर्णन विस्तार से किया गया है, यहां विष्णु गंगा में 5 तथा अलकनंदा में 5 कुण्डों का वर्णन है। यही से सूक्ष्म बदरीक्षम प्रारंभ होता है, इसी स्थल पर दायें और बायें दो पर्वत हैं, जिन्हें भगवान के द्वारपालों के रूप में जाना जाता है। दाये जाये ओर बाये विजय हैं।
2. **नन्द प्रयाग:-** नंदाकिनी तथा अलकनंदा नदियों के संगम पर नन्दप्रयाग स्थित है। यह समुद्र तल से 2804 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। कर्णप्रयाग से उत्तर में बद्रीनाथ मार्ग पर 21 किमी. आगे नंदाकिनी एवं अलकनंदा का पावन संगम है। पौराणिक कथा के अनुसार यहां पर नंद महाराज ने भगवान नारायण को प्रसन्न किया और उन्हें पुत्र के रूप में प्राप्त करने

के लिए तपस्या की थी। यहां पर नंदादेवी का भी बड़ा सुन्दर मंदिर है। नन्दा का मंदिर, नंद की तपस्थली एवं नंदाकिनी का बड़ा सुन्दर मंदिर है। इसलिए इस स्थल का नाम नंदप्रयाग पड़ा है। संगम पर भगवान शंकर का दिव्य मंदिर है यहाँ पर लक्ष्मीनारायण और गोपालजी का भी मंदिर दर्शनीय हैं।

3. **कर्णप्रयाग:** अलकनंदा तथा पिण्डार नदियों का संगम पर कर्णप्रयाग स्थित है। पिण्डार का एक नाम कर्ण गंगा भी है, जिसके कारण इस तीर्थ का नाम कर्णप्रयाग पड़ा यहां पर उमा मंदिर और कर्ण मंदिर दर्शनीय है। यहां पर भगवती उमा का प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है। संगम के पश्चिम की ओर शिलाखण्ड में दानवीर कर्ण की तपस्थली और मंदिर है, यही पर महादानी कर्ण द्वारा भगवान सूर्य की आराधना और अभेद्य कवच कुंडलों को प्राप्त किया गया माना जाता है। कर्ण की तपस्थली होने के कारण इस स्थान का नाम कर्णप्रयाग पड़ा।
4. **रुद्रप्रयाग:-** मंदाकिनी तथा अलकनंदा नदियों का संगम रुद्रप्रयाग में स्थित है। संगम के समीप चामुंडा देवी व रुद्रनाथ मंदिर दर्शनीय है, रुद्रप्रयाग ऋषिकेश से 131 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह नगर प्रसिद्ध बट्टीनाथ मोटर मार्ग पर स्थित है यह माना जाता कि नारद मुनि ने इस पर संगीत के गूढ़ रहस्यों को जानने लिए के रुद्रनाथ महादेव की उपासना की थी। श्रीनगर से उत्तर में 37 किमी. की दूरी पर नंदाकिनी तथा अलकनंदा के पावन संगम पर रुद्रप्रयाग नामक तीर्थ है, पुराणों में इस तीर्थ का विर्णन विस्तार से किया गया है। यहीं पर ब्रह्माजी की आज्ञा से देवऋषि नारद ने हजारों वर्षों की तपस्या के बाद भगवान शंकर का साक्षात्कार कर सांगोपांग गांधर्व शास्त्र प्राप्त किया था। यहीं पर भगवान रुद्र ने श्री नारदजी को महती नाम की वीणा भी प्रदान की। संगम से कुछ ऊपर भगवान शंकर का 'रुद्रश्रर' नामक लिंग है, जिसके दर्शन अती व पुण्यदायी बताये गये हैं, यहीं से यात्रा मार्ग केदारनाथ के लिए जाता है, जो जोशीमठ, चोपता, मण्डर, गोपेश्वर होकर चमोली में बट्टीनाथ के मुख्य मार्ग में मिल जाता है।
5. **देवप्रयाग:-** अलकनंदा तथा भगीरथी नदियों का संगम पर देवप्रयाग नामक स्थान स्थित है। इसी संगम स्थल के बाद इस नदी को गंगा के नाम से जाना जाता है। यह समुद्र तल से 1500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। देवप्रयाग की ऋषिकेश से सड़क मार्ग की दूरी 70 किमी. है। गढ़वाल क्षेत्र में भगीरथी नदी को सास तथा अलकनंदा नदी को बहू माना जाता है। देवप्रयाग में शिव मंदिर तथा रघुनाथ मंदिर है जो कि यहां के मुख्य आकर्षक हैं।

रघुनाथ मंदिर द्रविड़ शैली से निर्मित है। देवप्रयाग को सुदर्शन क्षेत्र भी कहा जाता है। देवप्रयाग में कौवे नहीं दिखाई देते, जो कि एक आश्चर्य की बात है। स्कंध पुराण केदारखंड में इस तीर्थ का विस्तार से वर्णन किया गया है कि देवशर्मा नामक ब्रह्ममण ने सतयुग में निराहार सूखे पत्ते चबाकर तथा एक पैर खड़े रहकर हजारों वर्षों तक तपस्या की तथा भगवान विष्णु के प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त किये।

6. **सोनप्रयाग:-** यह गाँव केदारनाथ मार्ग पर रुद्रप्रयाग व गौरीकुण्ड के मध्य स्थित है। गौरीकुण्ड तक से सोनप्रयाग 4 कमी. पहले पड़ता है, बसों यहां तक ही जाती हैं। इसके आगे गौरीकुण्ड तक 4 कमी. दूरी छोटी गाड़ियों में जाना पड़ता है। गौरीकुण्ड में गर्म पानी स्रोत में स्नान करने के बाद केदारनाथ की 14 कि.मी. की लम्बी चढ़ाई प्रारंभ होती है। सोनप्रयाग समुद्र तल से 1829 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, यहाँ बासुकी और मंदाकिनी नदियों आपस में मिलती हैं। केदारनाथ के मार्ग पर स्थित अपने नदियों को पवित्र पल के कारण इस का अत्याधिक धार्मिक महत्व है।



राजभाषा अनुभाग की गतिविधियाँ

यह कार्यालय संघ की राजभाषा नीति के अनुसार 'क' क्षेत्र में स्थित एक अधिसूचित कार्यालय है। इस कार्यालय में सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हैं और कुछ कर्मी प्रवीणता प्राप्त भी हैं।

राजभाषा के कार्यान्वयन का कार्य सभी के सहयोग के साथ सुचारू रूप से चल रहा है। पिछले छः माह के दौरान किए गए कार्य हैं:

- कार्यालय में दिनांक 27 अप्रैल 2023 एवं 31 अगस्त 2023 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें महानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय व्यय की अध्यक्षता में संचालित हुई। कार्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति पर समीक्षा करते हुए समिति ने प्रशंसा व्यक्त की और इसको जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।
- राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये 21 जून 2023 व 23 अगस्त 2023 को एक-एक दिन का पूर्ण कार्यदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 13 अधिकारियों एवं 28 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- राजभाषा हिंदी में रुचि बढ़ाने हेतु दिनांक 27 अप्रैल 2023 को निर्झर-48 वां अंक का ई-विमोचन किया गया।
- इस अवधि में कार्यालय के तीन अनुभागों के हिंदी में कार्य का निरीक्षण किया गया और उन्हें सुझाव दिया गया।
- इस अवधि के दौरान 2 कर्मियों को कार्यसाधक ज्ञान का प्रशिक्षण (प्राज्ञ) दिलाया गया।
- इसके अतिरिक्त दो प्रतिवेदनों जो संसद के पटल पर प्रस्तुत हो चुके हैं के अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद एवं पुनरीक्षण कार्य इस अनुभाग में किया गया और 5 प्रतिवेदनों पर अनुवाद व पुनरीक्षण कार्य जारी हैं।

लेखक परिचय

क्रम सं.	रचनाकार (श्री/सुश्री)	पदनाम / परिचय
1.	जी-20 को नई दिशा देता भारतीय नेतृत्व	श्री हेमंत कुमार मिश्रा, स.लेप.अ (महानिदेशक सचिवालय)
2.	अधूरी आजादी। (गीत)	श्री वेदप्रकाश फोन्दणी, स.लेप.अ (गुणवत्ता आश्वासन अनुभाग)
3.	नृत्य की महामारी	श्री अनुज मेहता, वे.लेप. (रिपोर्ट-II)
4.	जीना है तो जीतना पड़ता है	श्री हरेन्द्र कुमार, व.लेप. (सूचना प्रणाली स्कंध)
5.	अपनी चुटिया बचाओ	श्री हरेन्द्र कुमार, (सूचना प्रणाली स्कंध)
6.	लाल वाली बस	श्री हरेन्द्र कुमार, (सूचना प्रणाली स्कंध)
7.	भारत में पर्यटन	सुश्री पूनम यादव, व.लेप. (ए.एम.जी-I)
8.	किस्सा कॉफी का	श्री योगेश लक्षकार, कनिष्ठ अनुवादक, (हि.रि.क)
9.	माता-पिता	श्री सुरेन्द्र कुमार, लेप. (ए.सी.जी)
10.	सच्चे सुख का मार्ग	सुश्री कृष्णा सोनी, व.लेप.अ (सेवानिवृत्त)
11.	भवसागर से पार के साधन	सुश्री कृष्णा सोनी, व.लेप.अ (सेवानिवृत्त)
12.	पुस्तकों में घटती रुचि	सुश्री मयंका अधलखा, स.प्र.अ., (रिपोर्ट-II)
13.	भारत : प्राचीन काल से ही विश्व गुरु	श्री रविशंकर प्रभाकर, स.लेप.अ, (हि.रि.क)

14.	चल उठ,खड़ा हो जाग रे !	श्री शेखर कौशिक, स.लेप.अ, (प्रशि.एवं परीक्षा)
15.	आज की युवा पीढ़ी	सुश्री दीप्ती दिक्षित, कनिष्ठ अनुवादक
16.	छत्रपति शिवाजी	श्री सुरेन्द्र सिंह, व.लेप. (राजभाषा)
17.	मेरे प्यारे दो भाई	सुश्री पूजा, संजीव कुमार, व.लेप.अ (जी.डी) की पत्नी
18.	चालीस की महिला	सुश्री पूजा, संजीव कुमार, व.लेप.अ (जी.डी) की पत्नी
19.	उत्तराखण्ड के पर्यटन स्थान	श्री नरेंद्र सिंह चौहान, व.लेप. (हि.रि.क)
20.	राजभाषा अनुभाग की गतिविधियां	राजभाषा अनुभाग





हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान निबंध प्रतियोगिता का आयोजन



हिन्दी कार्यशाला 2023 में व्यस्त प्रतिभागियों की एक झलक



कार्यालय के फूटबॉल टीम के सदस्यों को प्रोत्साहन



राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े कर्मी



